RNI No. GUJHIN/2011/39228
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 343
दि. 16.04.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

होर्मुज पर ट्रंप का 'खुला रास्ता' ऐलान: राहत की उम्मीद के साथ बढ़ी वैश्विक अनिश्चितता, ऊर्जा बाजार में हलचल तेज

वैश्विक ऊर्जा बाजार और भू-राजनीतिक समीकरणों के बीच एक बड़ा बयान सामने आया है, जिसने दुनिया भर के नीति-निर्माताओं, निवेशकों और रणनीतिक विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को लेकर कहा है कि वे इसे "दुनिया और चीन के लिए स्थायी रूप से खोल रहे हैं।" यह बयान ऐसे समय आया है जब इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग को लेकर तनाव और अनिश्चितता लगातार बनी हुई थी। ट्रंप के इस दावे ने एक ओर वैश्विक तेल आपूर्ति में संभावित राहत की उम्मीद जगाई है, तो दूसरी ओर उनके विरोधाभासी संकेतों ने बाजार में नई अस्थिरता भी पैदा कर दी है।

दरअसल, स्ट्रेट ऑफ होर्मुज दुनिया के सबसे संवेदनशील और रणनीतिक समुद्री मार्गों में से एक है, जहां से वैश्विक समुद्री तेल आपूर्ति का लगभग 20 से 25 प्रतिशत हिस्सा गुजरता है। ऐसे में यहां किसी भी तरह की नाकेबंदी या तनाव का सीधा असर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों पर पड़ता है। ट्रंप के हालिया बयान के बाद ऊर्जा बाजार में शुरुआती प्रतिक्रिया राहत भरी रही, लेकिन जल्द ही विशेषज्ञों ने यह सवाल उठाना शुरू कर दिया कि क्या यह स्थिति वास्तव में स्थायी रूप से बदलने जा रही है या यह केवल एक राजनीतिक संकेत भर है।

डोनाल्ड ट्रंप ने अपने बयान में यह भी संकेत दिया कि क्षेत्रीय तनाव को कम करने के लिए कूटनीतिक प्रयास जारी हैं और ईरान से जुड़े मुद्दों पर प्रगति हो सकती है। उन्होंने यह दावा भी किया कि जैसे ही मौजूदा संघर्ष समाप्त होगा,

तेल की कीमतों में तेजी से गिरावट देखने को मिलेगी। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि उनके पहले दिए गए बयान को गलत तरीके से पेश किया गया था, जिससे स्थिति और अधिक उलझी हुई नजर आ रही है।

इस पूरे घटनाक्रम का एक और महत्वपूर्ण पहलू शी जिनपिंग के साथ संभावित मुलाकात को लेकर सामने आया है। ट्रंप ने कहा कि आने वाले हफ्तों में उनकी चीन के राष्ट्रपति से मुलाकात हो सकती है, जिसमें व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने यहां तक कहा कि चीन इस फैसले से "बहुत खुश" है और यह कदम वैश्विक संतुलन को बनाए रखने की दिशा में अहम साबित हो सकता है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का मानना है कि इस तरह के बयान अक्सर कूटनीतिक दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा भी होते हैं।

इससे पहले हालात उस समय और अधिक गंभीर हो गए थे जब अमेरिका और ईरान के बीच इस्लामाबाद में करीब 21 घंटे तक चली वार्ता बिना किसी ठोस समझौते के समाप्त हो गई थी। इस विफल वार्ता के बाद अमेरिका की ओर से ईरानी बंदरगाहों की ओर जाने वाले जहाजों को रोकने के संकेत दिए गए थे, जिससे वैश्विक स्तर पर चिंता बढ़ गई थी। ऊर्जा आपूर्ति में बाधा की आशंका ने तेल बाजार में अस्थिरता को और बढ़ा दिया था, और कई देशों ने वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों की तलाश भी तेज कर दी थी।

ट्रंप के इस नए बयान ने जहां एक ओर संभावित राहत का संकेत दिया है, वहीं दूसरी ओर यह स्पष्ट नहीं है कि जमीनी स्तर पर क्या बदलाव होंगे। विशेषज्ञों का कहना है कि केवल बयान देने से स्थिति नहीं बदलती, बल्कि इसके लिए ठोस कूटनीतिक और सैन्य कदमों की आवश्यकता होती है। खासतौर पर स्ट्रेट ऑफ होर्मुज जैसे संवेदनशील क्षेत्र में, जहां कई देशों के हित जुड़े हुए हैं, किसी भी निर्णय का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

ऊर्जा बाजार की दृष्टि से देखें तो यह स्थिति एक दोधारी तलवार की तरह है। यदि वास्तव में नाकेबंदी समाप्त होती है और मार्ग पूरी तरह खुला रहता है, तो इससे तेल की कीमतों में गिरावट आ सकती है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को राहत मिलेगी। लेकिन यदि यह केवल एक अस्थायी या राजनीतिक बयान साबित होता है, तो बाजार में अस्थिरता और बढ़ सकती है, जिससे निवेशकों का भरोसा डगमगा सकता है।

अमेरिका में घरेलू स्तर पर भी इस बयान के राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका में गैस की कीमतें, जो फिलहाल 4 डॉलर प्रति गैलन से अधिक हैं, आगामी चुनावों तक कम हो सकती हैं। इसे सीधे तौर पर चुनावी रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है, जहां ऊर्जा कीमतों को नियंत्रित कर मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है।

पूरे घटनाक्रम ने यह साफ कर दिया है कि वैश्विक राजनीति और ऊर्जा बाजार एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। एक बयान, एक निर्णय या एक कूटनीतिक पहल पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है। ऐसे में ट्रंप का यह दावा कि होर्मुज जलडमरूमध्य को "स्थायी रूप से खोल दिया गया है", केवल एक खबर नहीं, बल्कि एक ऐसा संकेत है, जिसके असर आने वाले समय में स्पष्ट होंगे।

फिलहाल, दुनिया की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि यह बयान वास्तविकता में कितना बदलता है और क्या सच में वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति का यह सबसे महत्वपूर्ण मार्ग अब स्थायी रूप से सुरक्षित और खुला रह पाएगा। तब तक बाजार, सरकारें और आम उपभोक्ता—all—एक अनिश्चित प्रतीक्षा की स्थिति में हैं, जहां हर नई खबर के साथ उम्मीद और आशंका दोनों साथ-साथ चल रही हैं।

पंजाब में सुरक्षा पर सियासी संग्राम: राघव चड्ढा की Z+ सुरक्षा वापसी से गरमाया माहौल, अब केंद्र के कवर पर टिकी नजरें

चंडीगढ़ से सामने आए एक फैसले ने पंजाब की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। राघव चड्ढा की Z+ श्रेणी की सुरक्षा को राज्य सरकार द्वारा वापस लेने के निर्णय ने न केवल राजनीतिक गलियारों में बहस छेड़ दी है, बल्कि इसे सत्ता और संगठन के बदलते समीकरणों के संकेत के रूप में भी देखा जा रहा है। यह फैसला ऐसे समय आया है, जब हाल ही में उन्हें राज्यसभा में पार्टी के उपनेता पद से हटाया गया था, जिससे इस पूरे घटनाक्रम को और भी ज्यादा महत्व मिल गया है।

पंजाब से राज्यसभा सांसद के रूप में निर्वाचित होने के बाद राघव चड्ढा को राज्य सरकार की ओर से Z+ सुरक्षा प्रदान की गई थी, जो देश में सबसे उच्च स्तर की सुरक्षा श्रेणियों में गिनी जाती है। इस सुरक्षा में आमतौर पर 30 से अधिक सुरक्षाकर्मी शामिल होते हैं, जिनमें विशेष रूप से प्रशिक्षित कमांडो भी तैनात रहते हैं। यह कवर किसी भी संभावित खतरे को ध्यान में रखते हुए दिया जाता है, और इसका वापस लिया जाना अपने आप में एक बड़ा प्रशासनिक और राजनीतिक संकेत माना जा रहा है।

इस फैसले के पीछे के कारणों को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। हाल ही में आम आदमी पार्टी ने 2 अप्रैल को संगठनात्मक स्तर पर बड़ा बदलाव करते हुए राघव चड्ढा को राज्यसभा में उपनेता पद से हटा दिया था और उनकी जगह अशोक मित्तल को यह जिम्मेदारी सौंपी थी। इसके बाद अब सुरक्षा में कटौती के फैसले ने इस पूरे घटनाक्रम को एक नई दिशा दे दी है, जिससे यह सवाल उठने लगे हैं कि क्या यह महज प्रशासनिक निर्णय है या इसके पीछे राजनीतिक रणनीति भी जुड़ी हुई है।

हालांकि, इस पूरे मामले में एक और अहम मोड़ तब आया, जब पार्टी के वरिष्ठ नेता सौरभ भारद्वाज ने दावा किया कि केंद्र सरकार की ओर से राघव चड्ढा को Z+ सुरक्षा प्रदान की जा रही है। यदि यह दावा सही साबित होता है, तो यह स्थिति और भी दिलचस्प हो जाती है, क्योंकि एक ओर जहां राज्य सरकार ने सुरक्षा वापस ली है, वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार द्वारा उसी स्तर का कवर देने की बात सामने आ रही है। इससे केंद्र और राज्य के बीच भूमिका और अधिकारों को लेकर भी नई बहस शुरू हो गई है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह मामला केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सत्ता के भीतर चल रहे बदलावों और संदेशों का भी प्रतीक है। पंजाब की राजनीति में आम आदमी पार्टी की सरकार और उसके आंतरिक समीकरणों को लेकर पहले से ही चर्चा होती रही है, और ऐसे में इस तरह के फैसले उन चर्चाओं को और बल देते हैं।

सुरक्षा व्यवस्था को लेकर लिए गए फैसले अक्सर संवेदनशील होते हैं, क्योंकि यह सीधे तौर पर किसी व्यक्ति की सुरक्षा से जुड़ा होता है। ऐसे में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि आने वाले दिनों में इस मुद्दे पर क्या स्पष्टीकरण सामने आता है और क्या वास्तव में केंद्र सरकार द्वारा सुरक्षा कवर दिया जाता है या नहीं।

फिलहाल, राघव चड्ढा की सुरक्षा को लेकर बना यह पूरा घटनाक्रम राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों ही स्तरों पर चर्चा का विषय बना हुआ है। एक ओर जहां इसे सियासी संदेश के तौर पर देखा जा रहा है, वहीं दूसरी ओर यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे को भी राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रभावित किया जा रहा है।

आने वाले समय में यह स्पष्ट होगा कि यह फैसला केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया का हिस्सा था या इसके पीछे गहरे राजनीतिक संकेत छिपे हुए हैं। फिलहाल, पंजाब की राजनीति में यह मुद्दा एक नई बहस को जन्म दे चुका है, जिसमें सत्ता, सुरक्षा और रणनीति—तीनों एक साथ केंद्र में आ गए हैं।

शिकोहपुर जमीन सौदे में कानूनी शिकंजा: मनी लॉन्ड्रिंग केस में रॉबर्ट वाड्रा समेत 11 आरोपियों को कोर्ट का समन

राजधानी नई दिल्ली की राउज एवेन्यू स्थित विशेष अदालत से एक अहम आदेश सामने आया है, जिसने एक बार फिर चर्चित भूमि सौदे और मनी लॉन्ड्रिंग मामले को सुर्खियों में ला दिया है। अदालत ने रॉबर्ट वाड्रा सहित कुल 11 आरोपियों को समन जारी करते हुए 16 मई को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया है। विशेष न्यायाधीश सुशांत चंगोट्रा ने यह आदेश प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दायर चार्जशीट पर संज्ञान लेते हुए पारित किया।

यह मामला हरियाणा के गुरुग्राम स्थित शिकोहपुर भूमि सौदे से जुड़ा हुआ है, जिसकी जड़ें वर्ष 2008 तक जाती हैं। जांच एजेंसी के अनुसार, रॉबर्ट वाड्रा से संबद्ध एक कंपनी ने उस समय करीब 3.5 एकड़ जमीन लगभग 7.5 करोड़ रुपये में खरीदी थी। इसके बाद वर्ष 2012 में इसी जमीन को लगभग 58 करोड़ रुपये में बेच दिया गया, जिससे भारी मुनाफा अर्जित किया गया। ईडी का आरोप है कि इस पूरे लेनदेन में वित्तीय अनियमितताओं और अवैध धन के उपयोग की आशंका है, जिसकी जांच के आधार पर मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया गया।

अदालत ने जिन अन्य आरोपियों को तलब किया है, उनमें कई कंपनियां और व्यक्ति शामिल हैं, जिन पर इस कथित लेनदेन में संलिप्तता के आरोप लगाए गए हैं। यह मामला केवल एक जमीन सौदे तक सीमित नहीं माना जा रहा, बल्कि इसे बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन और कथित मनी लॉन्ड्रिंग के नेटवर्क से जोड़कर देखा जा रहा है। इसी कारण से इस केस पर कानूनी और राजनीतिक दोनों ही हलकों की नजरें टिकी हुई हैं।

प्रवर्तन निदेशालय ने अपनी जांच के दौरान इस प्रकरण से जुड़ी 43 संपत्तियों को जब्त किया है, जिनकी कुल अनुमानित कीमत लगभग 37.64 करोड़ रुपये बताई गई है। एजेंसी का मानना है कि ये संपत्तियां कथित तौर पर अवैध धन के माध्यम से अर्जित की गई हैं। हालांकि, इस मामले में रॉबर्ट वाड्रा और उनके पक्ष ने सभी आरोपों से इनकार किया है और कहा है कि उनके खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का कोई मामला नहीं बनता।

इस पूरे घटनाक्रम में एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि अदालत ने इससे पहले 4 अप्रैल को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था, जिसके बाद अब समन जारी कर सभी आरोपितों को पेश होने का निर्देश दिया गया है। यह कदम इस बात का संकेत है कि अदालत अब मामले की सुनवाई को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है और आने वाले दिनों में इसमें महत्वपूर्ण कानूनी बहस देखने को मिल सकती है।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यह मामला आने वाले समय में और जटिल हो सकता है, क्योंकि इसमें वित्तीय लेनदेन, कंपनियों की भूमिका और सरकारी एजेंसियों की जांच जैसे कई पहलू शामिल हैं। साथ ही, यह मामला सार्वजनिक और राजनीतिक विमर्श में भी अपनी जगह बनाए रखेगा, क्योंकि इसमें एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति का नाम जुड़ा हुआ है।

फिलहाल, सभी की नजरें 16 मई की तारीख पर टिकी हैं, जब रॉबर्ट वाड्रा समेत अन्य आरोपियों को अदालत में पेश होना है। यह पेशी न केवल इस केस की अगली दिशा तय करेगी, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगी कि जांच एजेंसी द्वारा लगाए गए आरोपों को अदालत किस नजर से देखती है। आने वाले दिनों में इस मामले की हर सुनवाई और हर दलील पर देशभर की निगाहें बनी रहेंगी, क्योंकि यह मामला केवल कानूनी नहीं, बल्कि व्यापक सार्वजनिक महत्व का भी बन चुका है।

तनाव के बीच राहत की सांस: होर्मुज पार कर कांडला पहुंचा LPG टैंकर, भारत की ऊर्जा आपूर्ति को मिली मजबूती

वैश्विक तनाव और समुद्री अनिश्चितताओं के बीच भारत के लिए एक राहत भरी खबर सामने आई है, जिसने ऊर्जा सुरक्षा को लेकर बढ़ रही चिंताओं को कुछ हद तक कम कर दिया है। होर्मुज जलडमरूमध्य में नाकेबंदी और पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच 20,400 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर भारतीय टैंकर 'जग विक्रम' का सुरक्षित रूप से कांडला पोर्ट पहुंचना एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम माना जा रहा है। यह केवल एक जहाज का आगमन नहीं, बल्कि उस जटिल वैश्विक परिदृश्य में एक सकारात्मक संकेत है, जहां ऊर्जा आपूर्ति की निरंतरता सबसे बड़ी चिंता बन चुकी थी।

यह टैंकर ऐसे समय भारत पहुंचा है जब अमेरिका और ईरान के बीच घोषित दो सप्ताह के अस्थायी युद्धविराम के बाद हालात कुछ हद तक स्थिर हुए हैं। इसी युद्धविराम के दौरान 'जग विक्रम' ने 11 अप्रैल को होर्मुज जलडमरूमध्य को पार किया और सुरक्षित रूप से भारतीय तट तक पहुंचने में सफल रहा। यह मार्च के बाद से पश्चिमी हिस्से से निकलने वाला भारत का नौवां जहाज भी बन गया है, जो यह दर्शाता है कि तमाम बाधाओं के बावजूद भारत अपनी आपूर्ति श्रृंखला को बनाए रखने में जुटा हुआ है।

पश्चिम एशिया में हालिया तनाव ने समुद्री व्यापार, विशेष रूप से ऊर्जा आपूर्ति को गहराई से प्रभावित किया है। युद्ध जैसी स्थिति और

नाकेबंदी के कारण कई जहाज फारस की खाड़ी क्षेत्र में फंस गए थे, जिससे वैश्विक स्तर पर चिंता बढ़ गई थी। आंकड़ों के अनुसार, तनाव शुरू होने से पहले इस क्षेत्र में कुल 28 भारतीय जहाज मौजूद थे, जिनमें से 24 पश्चिमी हिस्से में और 4 पूर्वी हिस्से में थे। युद्धविराम से पहले जहां 8 जहाज पश्चिमी हिस्से से और 2 जहाज पूर्वी हिस्से से सुरक्षित निकाले जा सके, वहीं अब भी कई जहाज खाड़ी क्षेत्र में फंसे हुए हैं, जो स्थिति की गंभीरता को दर्शाता है।

भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देश के लिए यह स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण बन जाती है। देश अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा विदेशों से आयात करता है—करीब 88 प्रतिशत कच्चा तेल, 50 प्रतिशत प्राकृतिक गैस और 60 प्रतिशत एलपीजी। इन सभी की आपूर्ति में होर्मुज जलडमरूमध्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही मार्ग पश्चिम एशिया से भारत तक ऊर्जा संसाधनों को पहुंचाने का सबसे प्रमुख रास्ता है। ऐसे में इस मार्ग में किसी भी प्रकार की बाधा का सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था और आम जनता पर पड़ता है। 'जग विक्रम' का कांडला पहुंचना इसलिए भी अहम है क्योंकि यह युद्धविराम के बाद भारत पहुंचने वाला पहला जहाज है, जिसने यह संकेत दिया है कि हालात धीरे-धीरे सामान्य होने की दिशा में बढ़ सकते हैं। यह घटनाक्रम न केवल भारत के लिए, बल्कि वैश्विक ऊर्जा बाजार के लिए भी एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि इससे यह उम्मीद जगी है कि आपूर्ति श्रृंखला पूरी तरह बाधित नहीं होगी।

हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि स्थिति अभी पूरी तरह सामान्य नहीं हुई है। खाड़ी क्षेत्र में अभी भी कई जहाज फंसे हुए हैं और किसी भी समय तनाव फिर से बढ़ सकता है। ऐसे में भारत सहित कई देशों के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वे वैकल्पिक आपूर्ति मार्गों और रणनीतियों पर भी विचार करें, ताकि भविष्य में इस तरह की परिस्थितियों का सामना बेहतर तरीके से किया जा सके।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि वैश्विक राजनीति और ऊर्जा आपूर्ति एक-दूसरे से कितनी गहराई से जुड़ी हुई हैं। एक ओर जहां कूटनीतिक स्तर पर उठाए गए कदम युद्धविराम का रास्ता खोलते हैं, वहीं दूसरी ओर समुद्री मार्गों की सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भारत के लिए यह एक संकेत है कि उसे अपनी ऊर्जा सुरक्षा को और मजबूत बनाने के लिए दीर्घकालिक रणनीतियों पर ध्यान देना होगा।

फिलहाल, 'जग विक्रम' का सुरक्षित आगमन एक राहत की खबर जरूर है, लेकिन यह भी एक याद दिलाने वाला क्षण है कि वैश्विक परिस्थितियां कितनी तेजी से बदल सकती हैं। ऐसे में हर सकारात्मक घटनाक्रम के साथ सतर्कता बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। आने वाले दिनों में यह देखना अहम होगा कि क्या यह राहत स्थायी रूप ले पाती है या फिर वैश्विक तनाव एक बार फिर ऊर्जा आपूर्ति पर संकट के बादल खड़े कर देता है।

संपादकीय

उम्मीदों का गलियारा

निस्संदेह, दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे का उद्घाटन भारत के संरचनात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो सकता है। जो राष्ट्रीय राजधानी और उत्तराखंड के प्रवेश द्वार के बीच यात्रा के समय को छह घंटे से घटाकर ढाई घंटे करने का वायदा करता है। मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्र को समर्पित यह एक्सप्रेसवे उत्तराखंड ही नहीं, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उद्योग व पर्यटन को बढ़ावा देगा। इंजीनियरिंग की विशिष्ट उपलब्धि से बढ़कर, परियोजना राजमार्गों की कल्पना में एक बड़े बदलाव का संकेत भी है। जो महज एक सड़क ही नहीं है, बल्कि कई क्षेत्रों, बाजारों और अवसरों को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण आर्थिक गलियारा भी है। इस राजमार्ग के बनने से जहां परंपरागत मार्गों पर ट्रैफिक का दबाव कम होगा, वहीं बेहतर कनेक्टिविटी से देहरादून और मसूरी आदि अन्य हिल स्टेशनों में पर्यटन बढ़ेगा। निस्संदेह, इससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। पश्चिमी उ.प्र. के सहारनपुर व शामली जैसे जनपदों, जिन्हें विकास की दौड़ में पर्याप्त अवसर नहीं मिले, उनके लिये भी वरदान साबित हो सकता है। माना जा रहा है कि खाद्यान्न, भंडारण और रियल एस्टेट में भी इस परियोजना के लाभ नजर आएंगे। कह सकते हैं कि यह एक्सप्रेसवे भारतमाला जैसी परियोजनाओं के तहत एकीकृत, उच्च गति वाले गलियारों के लिये केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के लक्ष्यों को पूरा करता है। वहीं दूसरी ओर इस परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें विकास और पारिस्थितिक संवेदनशीलता के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। प्रतिष्ठित राजाजी पार्क क्षेत्र से गुजरने वाला यह ऊंचा वन्यजीव गलियारा, जिसमें वन्य जीवों के लिये अंडरपास बनाये गए हैं ताकि उनके प्राकृतिक आवागमन मार्गों में किसी तरह का व्यवधान पैदा न हो। जो इस मान्यता की कसौटी पर खरा उतरता है कि विकास के बुनियादी ढांचे को प्रकृति के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए।

हाल के वर्षों में देश की विभिन्न बड़ी विकास योजनाओं वाले क्षेत्रों में वन्य जीवों और मनुष्य के बीच जो संघर्ष बढ़ा है, वो विकास को पर्यावरण व वन्यजीवों के अधिवास के अनुकूल ढालने की जरूरत बताता है। कर्नाटक के हाथी गलियारे- जो बांदीपुर,नागरहोल और आसपास के जंगलों को जोड़ते हैं, दर्शाते हैं कि कि कैसे संपर्क मार्गों से वन्य जीवों के प्रवास-मार्ग की सुरक्षा होती है। जिससे मानव व वन्य जीवों का संघर्ष कम होता है। ऐसे में यदि दिल्ली-देहरादून राजमार्ग में अभिनव प्रयास प्रभावी साबित होते हैं, तो यह नया एक्सप्रेसवे पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में भविष्य की परियोजना के लिए एक आदर्श साबित हो सकता है। हालांकि, इस राजमार्ग को लेकर कुछ चिंताएं अभी बाकी हैं। राजमार्ग को पूरा करने के दौरान अंतिम समय में निर्माण कार्यों में किए गए सुधार और इसमें पहले हुई कुछ देरी की रिपोर्टों से कार्य निष्पादन की गुणवत्ता व समय सीमा के दबाव को लेकर सवाल भी उठे हैं। निस्संदेह, किसी संरचना के बुनियादी ढांचे का मूल्यांकन उद्घाटन की समय सीमा से नहीं बल्कि उसकी मजबूती, सुरक्षा उपायों और दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभावों के आधार पर ही होना चाहिए। अंततः यह एक्सप्रेसवे आशा और सावधानी दोनों का ही पर्याय है। निर्विवाद रूप से यह भारत की तेज और स्मार्ट निर्माण की महत्वाकांक्षा को भी दर्शाता है। इसके साथ ही उच्च मानकों की कसौटी पर खरा उतरने और जवाबदेही की जरूरत को भी रेखांकित करता है। निर्विवाद रूप से इस महत्वाकांक्षी परियोजना की वास्तविक सफलता इस बात पर भी निर्भर करेगी कि यह पारिस्थितिक और संरचनात्मक गुणवत्ता से समझौता किए बिना दक्षता को बनाये रखे। इसके अलावा पर्वतीय राज्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक अस्मिता और पर्यटन के दबाव से भूगर्भीय संवेदनशीलता की भी रक्षा हो। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से भूस्खलन व पर्यटकों का दबाव झेल रहे हिमालयी राज्यों में पर्यटन प्रकृति व स्थानीय संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए। आने वाले दिनों में दिल्ली-देहरादून राजमार्ग उत्तराखंड की चारधाम यात्रा को भी गति देगा, जिससे श्रद्धालुओं की संख्या में तेजी से विस्तार होना निश्चित है। वहीं चीन से मिलने वाली किसी चुनौती से निपटने में सेना की गतिशीलता, रसद व सैन्य आपूर्ति में भी यह राजमार्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला है।

युद्ध, बच्चे और हमारी सामूहिक विफलता

> प्रश्न यह नहीं है कि युद्ध कहां और क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि उन बच्चों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है, जिन्हें हम स्वयं इस संसार में लाते हैं; और जब हम उनके जीवन और सुरक्षा की रक्षा नहीं कर पाते, तब सभ्य समाज होने का हमारा दावा स्वतः ही कठघरे में खड़ा हो जाता है।

हाल ही में नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास में 'एंजेल्स ऑफ मिनाब' नाम से एक प्रदर्शनी आयोजित की गई है, जिसमें उन छोटे बच्चों की बनाई तस्वीरों को प्रदर्शित किया गया है, जो ईरान के मिनाब शहर के एक स्कूल के मलबे से बरामद हुई थीं। ये चित्र उस त्रासदी के साक्ष्य हैं, जिसमें एक हमले के दौरान अनेक बच्चों और अन्य नागरिकों की जान चली गई। यह प्रदर्शनी केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं है, बल्कि उन बच्चों के मौन को दर्ज करने का माध्यम है, जो इस घटना के बाद बोलने के लिए जीवित नहीं रहे। इन चित्रों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि वयस्कों के राजनीतिक और सैन्य संघर्षों के बीच बच्चों का जीवन सबसे पहले और सबसे आसानी से नष्ट होता है। यह स्थिति किसी एक घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक व्यवस्था का संकेत है, जिसमें बच्चों का अस्तित्व और सुरक्षा लगातार उपेक्षित रहते हैं। यह केवल एक घटना का विवरण नहीं, बल्कि उस व्यापक वास्तविकता की ओर संकेत है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए आकलन भी रेखांकित करते हैं।

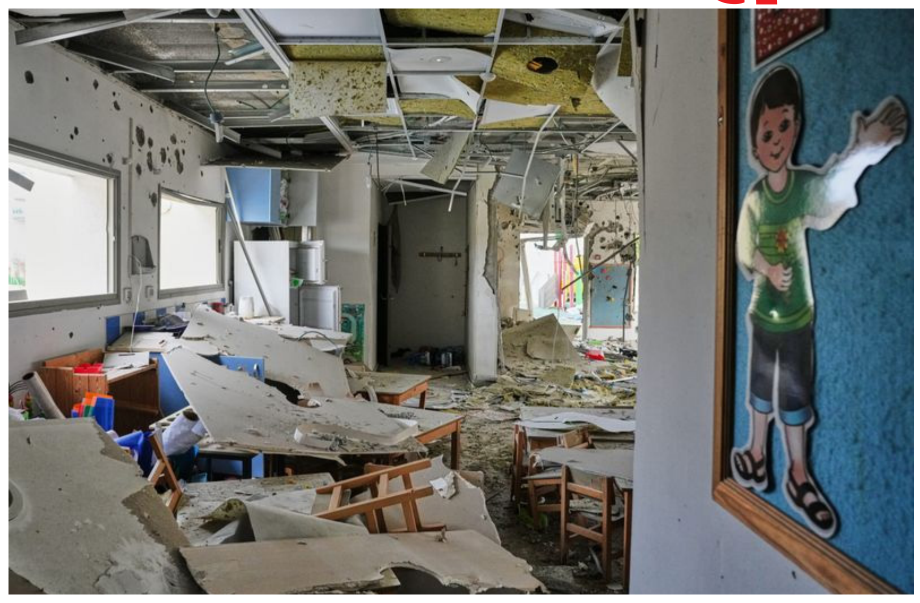

यूनिसेफ द्वारा जारी हालिया आकलन में, 'यूनिसेफ स्टैंड्स विद ईरान्स चिल्ड्रेन ऐज़ सीज़फायर ऑफर्स पाथ टू रिकवरी' के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया है कि वर्ष 2026 के आरंभिक महीनों में ईरान में दर्ज सैन्य हमलों और उनसे उत्पन्न मानवीय परिस्थितियों के दौरान 1100 से अधिक बच्चे मारे गए या घायल हुए हैं, और इन घटनाओं के प्रभाव बच्चों के जीवन पर लंबे समय तक बने रहने की आशंका है। यूनिसेफ ने यह भी रेखांकित किया है कि इन परिस्थितियों का सबसे अधिक और सबसे गहरा असर बच्चों पर पड़ा है। वे न केवल शारीरिक क्षति का सामना कर रहे हैं, बल्कि भय, असुरक्षा और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक आघात के साथ जीवन जीने के लिए विवश हैं। यूनिसेफ के अनुसार, जिन बच्चों का स्थान विद्यालयों और सुरक्षित पारिवारिक वातावरण में होना चाहिए था, वे आज विस्थापन, अस्थिरता और बुनियादी सुविधाओं के अभाव के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक बच्चों ने अपने परिजनों को खो दिया है और जो जीवित हैं, उनके लिए सामान्य जीवन की संभावना भी गंभीर रूप से बाधित हो चुकी है। यह स्थिति केवल एक मानवीय संकट नहीं, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था की गहरी विफलता को भी रेखांकित करती है, जो बच्चों की सुरक्षा के दावों के बावजूद उन्हें सबसे अधिक असुरक्षित छोड़ देती है। यह स्थिति केवल वर्तमान परिदृश्य का संकेत नहीं देती, बल्कि उस गहरी मानवीय त्रासदी की ओर भी इंगित करती है, जिसे सभ्य समाज ने अपनी आकांक्षाओं की आड़ में उपेक्षित कर दिया है। वर्ष 1956 में प्रकाशित पुस्तक 'नाइट' इस त्रासदी को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में सामने आती है, जिसमें एली विज़ेल ने अपने जीवन के उन अनुभवों को दर्ज किया है, जिन्हें उन्होंने मात्र 15 वर्ष की आयु में स्वयं जिया। ट्रांसिल्वेनिया के सिघेट शहर में जन्मे इस बालक को 1944 में उसके परिवार सहित उसके निवास-स्थान से हटाकर ऑशविट्ज और बाद में बुचेनवाल्ड जैसे यातना शिविरों में भेज दिया गया। यह कृति केवल एक व्यक्ति की स्मृतियों का संकलन नहीं है, बल्कि उस व्यापक मानवीय संकट का प्रमाण है, जिसमें एक बालक का बचपन, विश्वास और जीवन-बोध एक साथ विखंडित हो जाते हैं।

विज़ेल लिखते हैं कि 'मैं उन लपटों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरे विश्वास को सदा के लिए समाप्त कर दिया; मैं उस सन्नाटे को कभी नहीं भूल सकता, जिसने मुझसे जीवन की इच्छा छीन ली; और मैं उन क्षणों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरी आत्मा को नष्ट कर मेरे सपनों को राख में बदल दिया।' यह कथन केवल एक बालक की व्यक्तिगत स्मृति नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों की सामूहिक पीड़ा का प्रतिनिधित्व करता है, जो युद्ध और हिंसा के बीच अपने अस्तित्व से पहले ही वंचित हो जाते हैं।

Advertisement

युद्ध की त्रासदी का एक अन्य आयाम उस समय सामने आता है, जब हम 'ए डायरी ऑफ अ यंग गर्ल' को देखते हैं, जिसे ऐन फ्रैंक ने 1942 से 1944 के बीच, लगभग दो वर्षों तक, उस अवधि में लिखा जब वह अपने परिवार के साथ नाज़ी उत्पीड़न से बचने के लिए एक बंद स्थान में छिपकर रहने के लिए विवश थी। लगभग 13 से 15 वर्ष की आयु के बीच लिखी गई यह डायरी एक ऐसी बालिका के जीवन का सजीव दस्तावेज है, जो निरंतर भय, असुरक्षा और सीमित परिस्थितियों के बीच भी अपने सामान्य जीवन और सपनों को बनाए रखने का प्रयास कर रही थी। ऐन फ्रैंक की मृत्यु के उपरांत यह डायरी 1947 में प्रकाशित हुई, और यह केवल एक बालिका की स्मृतियों का संकलन भर नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों के जीवन की प्रतिनिधि कथा है, जिन्हें युद्ध ने असमय ही समाप्त कर दिया।

इसी डायरी में वह लिखती है, 'आई वांट टू गो ऑन लिविंग इवन आफ्टर माई डेथ' (मैं अपनी मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहती हूं) यह केवल एक बालिका की साधारण अभिलाषा नहीं है, बल्कि उन असंख्य अधूरे जीवनों की प्रतिध्वनि है, जिन्हें युद्ध ने पूर्ण होने का अवसर ही नहीं दिया। यह पंक्ति इस तथ्य को अत्यंत स्पष्टता से सामने लाती है कि युद्ध बच्चों से केवल उनका वर्तमान ही नहीं छीनता, बल्कि उनके भविष्य की संभावनाओं को भी जन्म लेने से पहले ही समाप्त कर देता है।

संयुक्त राष्ट्र और यूनिसेफ द्वारा 2023 में जारी रिपोर्ट 'मोअर दैन 300,000 ग्रेव वायलेशन्स अगेंस्ट चिल्ड्रेन इन कॉन्फ्लिक्ट वेरिफाइड वर्ल्डवाइड ओवर द पास्ट 18 इयर्स' के अनुसार, 2005 से 2023 के बीच कम से कम 1,20,000 बच्चे युद्ध में मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए हैं—अर्थात् औसतन हर दिन लगभग 20 बच्चे। इसके साथ ही, यूनिसेफ द्वारा 2024 में जारी आकलन 'नॉट अ न्यू नॉर्मल : 2024 इज़ वन ऑफ द वर्स्ट इयर्स फॉर चिल्ड्रेन इन कॉनफ्लिक्ट' यह संकेत करता है कि यह स्थिति सुधरने के बजाय और अधिक गंभीर होती जा रही है।

ये आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं, बल्कि उन जीवनों का मौन साक्ष्य हैं, जिन्हें अपना जीवन जीने का अवसर ही नहीं दिया गया। यह स्थिति केवल विफल नीतियों का परिणाम नहीं है, बल्कि उन सामूहिक संघर्षों और आकांक्षाओं का भी प्रतिबिंब है, जिनके बीच बच्चों का जीवन बार-बार उपेक्षित होता है। जब युद्ध और सत्ता के प्रश्न प्रमुख हो जाते हैं, तब बच्चों की सुरक्षा और उनका अस्तित्व स्वाभाविक रूप से हाशिये पर चला जाता है। यह प्रवृत्ति इस बात की ओर संकेत करती है कि हमारी प्राथमिकताओं का निर्धारण ही कहीं न कहीं त्रुटिपूर्ण है, जहां भविष्य का प्रतिनिधित्व करने वाले बच्चों को वर्तमान की जटिलताओं के बीच अनदेखा कर दिया जाता है। अंततः प्रश्न यह नहीं है कि युद्ध कहां और क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि उन बच्चों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है, जिन्हें हम स्वयं इस संसार में लाते हैं; और जब हम उनके जीवन और सुरक्षा की रक्षा नहीं कर पाते, तब सभ्य समाज होने का हमारा दावा स्वतः ही कठघरे में खड़ा हो जाता है।

प्रेरणा

श्रीकृष्ण की कृपा का मार्ग: संत वल्लभाचार्य और शुद्धाद्वैत की जीवनदर्शी परंपरा

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में अनेक ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने न केवल दर्शन को नई दिशा दी, बल्कि मानव जीवन को जीने की कला भी सिखाई। इन्हीं महान संतों में वल्लभाचार्य का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने 'शुद्धाद्वैत' सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि यह संसार किसी प्रकार का भ्रम नहीं, बल्कि स्वयं परमात्मा की लीला है। उनका यह विचार भारतीय दर्शन की परंपरा में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ, क्योंकि इससे भक्ति को एक नया, सहज और आनंदपूर्ण स्वरूप प्राप्त हुआ।

वल्लभाचार्य का जीवन प्रारंभ से ही चमत्कारों और दिव्य संकेतों से भरा हुआ था। उनके पिता लक्ष्मण भट्ट और माता इल्लम्मागारू एक धार्मिक और संस्कारी परिवार से थे। उनके जन्म की कथा अत्यंत विलक्षण है। कहा जाता है कि जब उनका जन्म चंपारण्य के वन में हुआ, तब माता-पिता को लगा कि बालक जीवित नहीं है। वे उसे वहीं छोड़कर आगे बढ़ गए, किंतु ईश्वरीय संकेत मिलने पर जब वे लौटे, तो देखा कि बालक अग्नि के घेरे में सुरक्षित है। यह घटना केवल एक चमत्कार नहीं, बल्कि इस बात का प्रतीक है कि उनका जीवन ईश्वर की विशेष कृपा से संचालित था।

बाल्यकाल से ही वल्लभाचार्य की प्रतिभा असाधारण थी। उन्होंने बहुत कम आयु में वेद, उपनिषद और शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया। उनकी स्मरण शक्ति और तर्क क्षमता अद्वितीय थी। किंतु उनकी विशेषता केवल ज्ञान तक सीमित नहीं थी; वे एक ऐसे आचार्य थे, जिन्होंने ज्ञान को भक्ति के साथ जोड़ा और उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उतारने का मार्ग दिखाया।

वल्लभाचार्य के दर्शन का केंद्र बिंदु श्रीकृष्ण हैं। उनके अनुसार, श्रीकृष्ण ही परब्रह्म हैं और यह संपूर्ण जगत उनकी लीला का विस्तार है। उन्होंने यह बताया कि सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय—all—एक ही परम सत्ता के विभिन्न रूप हैं। इस दृष्टिकोण से संसार को नकारने के बजाय उसे स्वीकार करना और उसमें ईश्वर का अनुभव करना ही सच्ची साधना है। 'शुद्धाद्वैत' का मूल भाव यही है कि ब्रह्म और जगत में कोई भेद नहीं है। यह सिद्धांत अन्य अद्वैत विचारों से भिन्न है, जहाँ संसार को माया या असत्य माना जाता है। वल्लभाचार्य ने कहा कि यह जगत वास्तविक है और इसमें जो कुछ भी है, वह परमात्मा का ही स्वरूप है। इस प्रकार, उन्होंने जीवन के प्रति एक सकारात्मक और स्वीकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। वल्लभाचार्य ने 'पुष्टि मार्ग' की स्थापना की, जो उनके दर्शन का व्यावहारिक रूप है। 'पुष्टि' का अर्थ है ईश्वर की कृपा या अनुग्रह। इस मार्ग में साधक अपने प्रयासों से अधिक भगवान की कृपा पर निर्भर करता है। यह भक्ति का ऐसा स्वरूप है, जिसमें कठोर तप, त्याग या वैराग्य की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि प्रेम, स्नेह और सेवा के माध्यम से भगवान को प्राप्त किया जाता है। उनके द्वारा स्थापित इस मार्ग में 'सेवा' का विशेष महत्व है। भक्त भगवान को बालक के रूप में मानकर उनकी सेवा करता है—उन्हें जगाता है, स्नान कराता है, भोजन कराता है और सुलाता है। यह भक्ति केवल पूजा नहीं, बल्कि एक जीवंत संबंध है, जिसमें भक्त और भगवान के बीच प्रेम का अद्भुत संवाद होता है।

वल्लभाचार्य ने अपने सिद्धांतों को स्पष्ट करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उन्होंने ब्रह्मसूत्र पर 'अणुभाष्य', भागवत पर 'सुबोधिनी', 'सिद्धांत रहस्य', 'अंतःकरण प्रबोध' जैसे ग्रंथों के माध्यम से अपने विचारों को विस्तार दिया। इन ग्रंथों में गहन तात्त्विक विचारों को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे सामान्य व्यक्ति भी उन्हें समझ सके।

उनके जीवन की एक अत्यंत प्रेरणादायक घटना सूरदास से जुड़ी है। एक बार वल्लभाचार्य यमुना तट पर भ्रमण कर रहे थे, तब उन्होंने एक अंधे व्यक्ति को रोते हुए देखा। उस व्यक्ति ने कहा कि वह भगवान की लीला को नहीं समझ सकता। वल्लभाचार्य ने उसकी पीड़ा को महसूस किया और अपने स्पर्श से उसे दिव्य अनुभूति प्रदान की। उस क्षण उसे श्रीकृष्ण की लीलाएँ सजीव दिखाई देने लगीं। यही व्यक्ति आगे चलकर महान भक्त कवि सूरदास बना, जिसने अपने पदों के माध्यम से कृष्ण प्रेम को अमर कर दिया।

वल्लभाचार्य का भक्ति मार्ग अत्यंत आनंदमय और उत्सवपूर्ण है। इसमें भगवान की पूजा केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव है। उनके अनुयायी भगवान के साथ एक पारिवारिक संबंध स्थापित करते हैं और उनकी सेवा को अपना सौभाग्य मानते हैं। इस प्रकार, भक्ति जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन जाती है। उनके जीवन का अंतिम चरण भी अत्यंत रहस्यमय और दिव्य था। कहा जाता है कि जब उन्होंने अपने सभी कर्तव्यों को पूर्ण कर लिया, तब वे काशी के हनुमान घाट पर गए। वहाँ स्नान करते समय एक दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ और वे उसी में विलीन हो गए। यह घटना उनके जीवन की पूर्णता और उनके आत्मा के परमात्मा में लय का प्रतीक है। वल्लभाचार्य का 'शुद्धाद्वैत' दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था। यह हमें सिखाता है कि जीवन में ईश्वर को केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि हर क्षण और हर अनुभव में महसूस किया जा सकता है। उनका 'पुष्टि मार्ग' हमें यह विश्वास दिलाता है कि भगवान की कृपा ही जीवन का सबसे बड़ा सहारा है। इस प्रकार, संत वल्लभाचार्य ने भारतीय दर्शन और भक्ति को एक नई दिशा दी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ईश्वर केवल ज्ञान का विषय नहीं, बल्कि प्रेम और अनुभव का भी विषय है। उनकी शिक्षाएँ आज भी लाखों लोगों के जीवन में शांति, संतोष और आनंद का स्रोत बनी हुई हैं, और उनकी परंपरा निरंतर मानवता को आध्यात्मिक प्रकाश प्रदान कर रही है।

कॉरपोरेट जगत की 'द केरला स्टोरी'

उस अजमेर कांड का तो स्मरण होगा ही, जो 1992 में घटित हुआ था और जिसके खुलासे ने देश को हिलाकर रख दिया था। अजमेर में करीब सौ छात्राओं को ब्लैकमेल कर उनका लंबे समय तक यौन शोषण किया गया था। एक छात्रा संग दुष्कर्म के बाद उसके अंतरंग फोटो लेकर उसकी अन्य सहेलियों को चंगुल में फंसाया गया और फिर एक घिनौना सिलसिला कायम हो गया। यह मामला उजागर होने के बाद कई छात्राओं ने आत्महत्या कर ली थी।

छात्राओं को ब्लैकमेल कर उनका यौन शोषण करने वाले अजमेर के ख्वाजा गरीब नवाज के खादिम एवं उसके साथी थे और उनकी हैवानियत की शिकार छात्राएं हिंदू थीं। बाद में अजमेर जैसे और भी कांड कई शहरों में सामने आए। एक तो पिछले साल अजमेर के ही विजयनगर में सामने आया, जिसमें हिंदू लड़कियों के यौन शोषण के साथ उनका जबरन मतांतरण कराने की कोशिश की गई। एक अन्य मामला भोपाल में सामने आया। यहां के एक कालेज की कई हिंदू छात्राओं को मुस्लिम लड़कों ने हिंदू नाम से प्यार के जाल में फंसाकर ब्लैकमेल किया और फिर वे उन्हें इस्लाम कुबूल करने के लिए मजबूर करने लगे।

देश में अजमेर जैसे कितने कांड हो चुके हैं, उनकी गिनती करना कठिन है, लेकिन यह समझ लीजिए कि लंदन के ग्रूमिंग गैंग की तरह भारत में जगह-जगह जिहादी सोच वाले युवकों के ऐसे ग्रूमिंग गिरोह सक्रिय हैं, जो दूसरे मजहब की लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाने और उनका यौन शोषण करने के बाद उन्हें इस्लाम स्वीकार करने को विवश करते हैं। कई इस्लामिक दावा सेंटर वस्तुतः ग्रूमिंग गैंग ही हैं। ये सबको इस्लामी परचम तले लाने के लिए इतने अधिक जुनून से भरे हैं कि कुछ वर्ष पहले एक दावा सेंटर नोएडा के मूक-बधिर छात्रों का ब्रेनवाश कर मतांतरण करने में लगा हुआ था। इसी प्रकार बलरामपुर, यूपी में छांगुर बाबा नामक एक फकीर छल-बल से हिंदुओं का मतांतरण करने में जुटा था। दीन की दावत देने की सनक पाले इस्लामिक दावा सेंटर किस तरह ग्रूमिंग गैंग सरीखा काम करते हैं, इसकी एक झलक फिल्म 'द केरला स्टोरी' में दिखाई गई थी। इस फिल्म में बताया गया था कि हिंदू लड़कियों का कैसे ब्रेनवाश किया जाता है और किस तरह वेद, पुराण की बातों को मनगढ़ंत बताते हुए देवी-देवताओं को लांछित कर उन्हें यह समझाया जाता है कि एकमात्र सच्चा मजहब इस्लाम ही है, बाकी सब झूठे हैं। फर्जी किस्म के लिबरल-सेक्युलर लोगों को यह फिल्म केरल में ऐसे कई मामले सामने आने के बाद भी रास नहीं आई थी, जो यह बताते थे कि मुस्लिम युवकों ने किस तरह हिंदू एवं ईसाई लड़कियों का ब्रेनवाश कर उन्हें मुसलमान बनाया और फिर उन्हें जिहाद के लिए अफगानिस्तान, सीरिया ले जाने की कोशिश की। द केरला स्टोरी को प्रोपेगंडा फिल्म बताना आसान था, लेकिन टीसीएस नासिक दफ्तर में जो कुछ हुआ, उसे किसी के लिए भी नकारना मुश्किल है, क्योंकि यह एक जीती-जागती द केरला स्टोरी ही है।

टीसीएस के नासिक कार्यालय में काम करने वाले कुछ मुस्लिम कर्मी एक गिरोह बनाकर कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाली अथवा किसी तरह की पारिवारिक समस्या से ग्रस्त हिंदू महिला कर्मचारियों को प्रमोशन, आकर्षक वेतनवृद्धि का लालच देकर या फिर प्यार का नाटक करके उनका यौन शोषण करने के साथ उनका मतांतरण कराने की कोशिश में लगे थे। इस गिरोह का भांडा तब फूटा, जब एक हिंदू लड़की रोजा रखने लगी। अब सामने आ रहा है कि कई हिंदू लड़कियों को इस्लामी तौर-तरीके अपनाने, मांस खाने और इस्लाम कुबूल करने के लिए मजबूर किया गया। इनका यौन शोषण भी किया गया-किसी का जबरन और किसी के साथ लव जिहाद के जरिये। चूंकि इस गिरोह में एचआर विभाग की एक मुस्लिम महिला भी शामिल थी, इसलिए पीड़ित लड़कियों की शिकायत नहीं सुनी गई और उलटे उन्हें नौकरी से हाथ धोने की धमकी दी गई। आखिर टीसीएस जैसी कंपनी में एचआर विभाग के आगे शिकायत-सुनवाई की कोई व्यवस्था क्यों नहीं थी? क्या यौन उत्पीड़न रोकने वाली समिति यानी प्रिवेंशन आफ सेक्सुअल हैरेसमेंट कमिटी केवल कागजों में थी? टीसीएस टाटा समूह की कंपनी होने के साथ ही देश की सबसे बड़ी आइटी भी कंपनी है। जब ऐसी नामी कंपनी में सुनियोजित तरीके से यौन उत्पीड़न हो रहा था और उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई तो उन अन्य छोटी-मोटी कंपनियों का क्या हाल होगा, जहां इस सनक से ग्रस्त कर्मचारी-अधिकारी प्रभावशाली पदों पर बैठे हों कि दूसरे मजहब वालों को येन-केन-प्रकारेण मुसलमान बनाना है या फिर गजवा-ए-हिंद करना है? पहले माना जाता था कि छल-बल, लोभ-लालच से दूसरे मजहब वालों और खासकर हिंदुओं को मुसलमान बनाने की सनक से कुछ मुल्ला-मौलवी किस्म के लोग ही ग्रस्त हैं, पर अब तो पढ़े-लिखे मुस्लिम युवा भी इसी सोच से ग्रस्त दिख रहे हैं। इसी सोच का नतीजा है लव जिहाद। यह शब्द केरल हाई कोर्ट की देन है, क्योंकि वहां ऐसे कई मामले आए थे, जिनमें मुस्लिम लड़कों ने हिंदू-ईसाई लड़कियों को झूठे प्रेमजाल में फंसाकर मुसलमान बनाया। उन्होंने इन लड़कियों के मन में अपने स्वजनों के प्रति भी घृणा पैदा कर दी, लेकिन देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो लव जिहाद को कुछ लोगों की कपोल कल्पना समझते हैं। यह और कुछ नहीं जीती मक्खी निगलने वाली समझ या फिर कहें कि सनक है।

अभियान

मोहिनी एकादशी का दिव्य रहस्य: जब श्रीहरि की कृपा मोह-माया से मुक्ति का द्वार खोलती है

सनातन परंपरा में एकादशी का व्रत केवल एक धार्मिक कर्म नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और ईश्वर से जुड़ने का एक पवित्र अवसर माना गया है। इन्हीं एकादशियों में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को आने वाली मोहिनी एकादशी का विशेष महत्व है। यह वह दिव्य दिन है जब स्वयं भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृत प्रदान किया था और संसार को यह संदेश दिया था कि जब जीवन में भ्रम, मोह और असत्य बढ़ जाए, तब ईश्वर स्वयं किसी न किसी रूप में आकर धर्म की रक्षा करते हैं। यही कारण है कि इस एकादशी को केवल व्रत के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वरीय कृपा के उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

वर्ष 2026 में मोहिनी एकादशी का आगमन एक विशेष आध्यात्मिक संयोग लेकर आया है। पंचांग के अनुसार, एकादशी तिथि 26 अप्रैल की संध्या 6 बजकर 8 मिनट से प्रारंभ होकर 27 अप्रैल की संध्या 6 बजकर 17 मिनट तक रहेगी। उदया तिथि के अनुसार व्रत 27 अप्रैल को रखा जाएगा, और पारण 28 अप्रैल की प्रातः 5 बजकर 38 मिनट से 8 बजकर 17 मिनट के मध्य किया जाएगा। इस अवधि में जो साधक श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के साथ व्रत का पालन करता है, वह केवल कर्मों के बंधन से ही मुक्त नहीं होता, बल्कि उसके भीतर एक नई चेतना का जन्म होता है।

मोहिनी एकादशी का नाम सुनते ही मन में एक अद्भुत कथा जीवंत हो उठती है। समुद्र मंथन के समय जब देवताओं और असुरों के बीच अमृत को लेकर संघर्ष हुआ, तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया। यह रूप इतना आकर्षक, इतना मोहक था कि असुर भी उसके प्रभाव में आ गए। मोहिनी रूप में भगवान ने अमृत को देवताओं में वितरित कर दिया और धर्म की रक्षा की। यह कथा केवल एक पौराणिक प्रसंग नहीं है, बल्कि यह जीवन का गूढ़ सत्य भी है कि जब मनुष्य मोह और भ्रम में फंस जाता है, तब ईश्वर उसे सही मार्ग दिखाने के लिए स्वयं प्रकट होते हैं।

इस दिन की साधना का मूल भाव यही है कि मनुष्य अपने भीतर के मोह को पहचान कर उसे त्यागने का प्रयास करे। संसार में रहते हुए भी यदि मनुष्य अपने मन को ईश्वर में स्थिर कर ले, तो वही सच्चा वैराग्य है। मोहिनी एकादशी हमें यही सिखाती है कि भक्ति केवल मंदिरों में दीप जलाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मा का वह दीपक है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करता है।

इस पवित्र दिन की शुरुआत ब्रह्म मुहूर्त में होती है, जो कि सुबह 4 बजकर 12 मिनट से 4 बजकर 55 मिनट तक का समय है। यह वह क्षण होता है जब वातावरण में दिव्यता का संचार सबसे अधिक होता है। इस समय उठकर जब कोई साधक स्नान करता है, अपने घर को शुद्ध करता है और भगवान का ध्यान करता है, तब उसके भीतर एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है। जल में तिल डालकर स्नान करना केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि यह शरीर और मन की शुद्धि का प्रतीक है।

पूजा के समय जब लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित की जाती है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं वैकुंठ का द्वार खुल गया हो। पीला चंदन, अक्षत, पुष्प और तुलसी दल अर्पित करना केवल एक विधि नहीं, बल्कि यह प्रेम की अभिव्यक्ति है। तुलसी के बिना भगवान विष्णु की पूजा अधूरी मानी जाती है, क्योंकि तुलसी स्वयं भक्ति का प्रतीक है।

जब भक्त अपने हाथों से पंचामृत तैयार करता है और भगवान को भोग अर्पित करता है, तब वह केवल अन्न नहीं, बल्कि अपना भाव अर्पित कर रहा होता है। पीले रंग की मिठाई, फल और प्रसाद के माध्यम से भक्त यह व्यक्त करता है कि उसका जीवन भी ईश्वर की कृपा से मधुर हो। इसके बाद जब मोहिनी एकादशी व्रत कथा का पाठ किया जाता है, तब मन और अधिक एकाग्र हो जाता है और आत्मा ईश्वर के समीप पहुँचने लगती है।

आरती के समय जब घी का दीपक जलता है, उसकी लौ केवल प्रकाश ही नहीं देती, बल्कि यह उस आंतरिक ज्योति का प्रतीक है, जो हर मनुष्य के भीतर विद्यमान है। जब भक्त आरती करते हुए भगवान का स्मरण करता है, तब वह अपने भीतर की अंधकारमय प्रवृत्तियों को समाप्त करने का संकल्प लेता है।

इस दिन लक्ष्मी माता की पूजा का भी विशेष महत्व है। जब भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी दोनों की आराधना की जाती है, तब जीवन में केवल आध्यात्मिक उन्नति ही नहीं, बल्कि भौतिक सुख-समृद्धि भी प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन अन्न, वस्त्र और गुड़ का दान करने से दरिद्रता दूर होती है और जीवन में संतुलन आता है।

मोहिनी एकादशी का व्रत केवल एक दिन का उपवास नहीं है, बल्कि यह आत्मा की यात्रा है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों, यदि मन में ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है, तो हर बाधा दूर हो सकती है। यह व्रत हमें अपने भीतर झांकने का अवसर देता है, अपने दोषों को पहचानने और उन्हें सुधारने की प्रेरणा देता है।

जब कोई साधक इस व्रत को पूरी श्रद्धा और नियम के साथ करता है, तो उसके जीवन में एक अद्भुत परिवर्तन देखने को मिलता है। उसका मन शांत हो जाता है, विचार शुद्ध हो जाते हैं और जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। यही इस व्रत का वास्तविक फल है—केवल बाहरी सुख नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतोष।

अंततः मोहिनी एकादशी हमें यह सिखाती है कि जीवन का सबसे बड़ा सत्य ईश्वर की कृपा है। जब हम अपने अहंकार, मोह और भ्रम को त्याग कर भगवान की शरण में आते हैं, तब ही हमें सच्चा आनंद प्राप्त होता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि चाहे संसार कितना भी आकर्षक क्यों न लगे, सच्ची शांति केवल ईश्वर के चरणों में ही मिलती है।

इस प्रकार, मोहिनी एकादशी केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक दिव्य अनुभूति है, एक ऐसा अवसर है जब मनुष्य अपने भीतर की यात्रा शुरू करता है और ईश्वर के साथ अपने संबंध को और गहरा बनाता है। जो इस दिन श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के साथ व्रत करता है, वह न केवल अपने पापों से मुक्त होता है, बल्कि जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भी समझने लगता है। यही इस पावन एकादशी का सच्चा संदेश है—भक्ति में ही मुक्ति है, और ईश्वर की कृपा ही जीवन का सबसे बड़ा धन है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

एक ओर तपती धरती, दूसरी ओर बरसते बादल: मौसम का बदला मिजाज देश को दे रहा दोहरी चेतावनी

देश का मौसम इन दिनों जैसे दो अलग-अलग चेहरों के साथ सामने खड़ा है—एक चेहरा तपिश से भरा हुआ, जो उत्तर भारत को झुलसा रहा है, और दूसरा चेहरा बारिश, आंधी और बर्फबारी का, जो कई राज्यों को राहत और चेतावनी दोनों दे रहा है। राजधानी दिल्ली में अब गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं और आने वाले एक हफ्ते तक हालात और भी गंभीर हो सकते हैं। मौसम विभाग के संकेत साफ हैं कि यह सिर्फ शुरुआत है, असली परीक्षा अभी बाकी है।

बुधवार की सुबह जब लोग अपने घरों से बाहर निकले तो हल्की ठंडक जरूर महसूस हुई, लेकिन जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ा, उसकी तपिश ने शहर को अपने शिकंजे में लेना शुरू कर दिया। न्यूनतम तापमान करीब 20 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने का अनुमान है। आसमान पूरी तरह साफ रहने वाला है, जिसका मतलब है कि सूरज की किरणें बिना किसी रुकावट के सीधे धरती पर गिरेंगी और गर्मी को और तीखा बना देंगी। आने वाले सात दिनों तक इसी तरह का मौसम रहने की संभावना जताई गई है, जिसमें तापमान धीरे-धीरे 1 से 2 डिग्री तक और बढ़ सकता है। यह बढ़ोतरी भले ही कागज पर मामूली लगे, लेकिन जमीन पर इसका असर बेहद तीव्र होता है, जिससे लोगों का दिन में घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

जहाँ एक ओर उत्तर भारत गर्मी से जूझ रहा है, वहीं दूसरी ओर पूर्वोत्तर भारत में मौसम ने बिल्कुल अलग रंग दिखाया है। असम और मेघालय में 15 से 18 अप्रैल के बीच बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। यहां न केवल बारिश होगी, बल्कि 30 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं भी चल सकती हैं। आसमान में बिजली की गर्जना और

चमक लोगों को सतर्क रहने का संकेत दे रही है। इसी तरह नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में भी मौसम का यही मिजाज बना रहेगा, जहां बारिश के साथ-साथ बिजली गिरने की आशंका भी जताई गई है। पूर्वोत्तर के पहाड़ी राज्य अरुणाचल प्रदेश में स्थिति और भी संवेदनशील हो सकती है। यहां 15 से 18 अप्रैल के दौरान गरज-चमक के साथ बारिश और कुछ इलाकों में भारी वर्षा का अनुमान है। यह मौसम जहां एक ओर राहत देता है, वहीं दूसरी ओर भूस्खलन और अन्य प्राकृतिक आपदाओं का खतरा भी बढ़ा देता है।

उत्तर-पश्चिम भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में भी मौसम पूरी तरह सक्रिय नजर आ रहा है। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में 15 से 18 अप्रैल के बीच बारिश के साथ-साथ बर्फबारी का भी अलर्ट जारी किया गया है। 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाएं इस मौसम को और चुनौतीपूर्ण बना सकती हैं। वहीं हिमाचल प्रदेश में 17 से 19 अप्रैल के बीच इसी तरह का मौसम देखने को मिलेगा, जहां ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फ गिरने की संभावना है।

मैदानी इलाकों में भी मौसम का असर साफ दिखाई देगा। पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में 17 और 18 अप्रैल को गरज-चमक के साथ हल्की बारिश और 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने की संभावना है। यह बदलाव भले ही अस्थायी राहत दे, लेकिन इसके साथ तेज हवाएं और बिजली गिरने का खतरा भी जुड़ा हुआ है।

पूर्वी भारत भी इस मौसमीय बदलाव से अछूता नहीं है। पश्चिम बंगाल और सिक्किम में 15 से 18 अप्रैल के बीच गरज-चमक के साथ हल्की बारिश का अनुमान है। गंगा के मैदानी क्षेत्रों में भी इसी तरह का मौसम बना रहेगा। वहीं ओडिशा में 17 से 20 अप्रैल के बीच बारिश और 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं, जो लोगों को सतर्क रहने का संकेत देती हैं।

दक्षिण भारत में भी मौसम ने हलचल मचा रखी है। कर्नाटक के कई जिलों में 15 और 16 अप्रैल को हल्की से मध्यम बारिश की संभावना जताई गई है। यह बारिश गर्मी से राहत जरूर दे सकती है, लेकिन इसके साथ उमस और नमी भी बढ़ सकती है, जिससे लोगों को असहजता का सामना करना पड़ सकता है।

मौसम विभाग के अनुसार, देश के अधिकांश हिस्सों में तापमान बढ़ने का सिलसिला जारी रहेगा। उत्तर-पश्चिम भारत में 15 से 18 अप्रैल के बीच अधिकतम तापमान में 4 से 5 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि हो सकती है। मध्य और पूर्वी भारत में भी तापमान 2 से 4 डिग्री तक बढ़ सकता है, जबकि महाराष्ट्र में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दर्ज की जा सकती है। यह बढ़ता तापमान आने वाले दिनों में लू की स्थिति पैदा कर सकता है, जिससे स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है।

यह पूरा मौसमीय परिदृश्य एक स्पष्ट संकेत देता है कि देश जलवायु के एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां चरम स्थितियां सामान्य होती जा रही हैं। एक ओर भीषण गर्मी है, जो लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर रही है, तो दूसरी ओर अचानक होने वाली बारिश, तेज हवाएं और बर्फबारी हैं, जो अनिश्चितता और जोखिम को बढ़ा रही हैं।

इस बदलते मौसम के बीच आम आदमी के लिए सबसे जरूरी है सतर्कता और सावधानी। जहां गर्मी से बचाव के लिए पानी का अधिक सेवन, धूप से बचाव और हल्के कपड़ों का चयन जरूरी है, वहीं बारिश और आंधी वाले क्षेत्रों में बिजली गिरने और तेज हवाओं से बचने के उपाय अपनाने होंगे।

देश के अलग-अलग हिस्सों में मौसम का यह बदलता मिजाज केवल एक समाचार नहीं, बल्कि एक चेतावनी है—प्रकृति हमें संकेत दे रही है कि संतुलन बनाए रखना अब पहले से कहीं अधिक जरूरी हो गया है। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह मौसम किस करवट बैठता है, लेकिन फिलहाल इतना तय है कि देश के लोगों को गर्मी और बारिश दोनों के लिए तैयार रहना होगा।

मदार-पालनपुर रेलखंड के मध्य आरसीसी बॉक्स लॉन्चिंग कार्य हेतु रेलसेवाएं प्रभावित रहेंगी

उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा अजमेर मंडल के मदार–पालनपुर रेलखंड पर रानी–खीमेल स्टेशनों के मध्य ब्रिज संख्या 638 पर आरसीसी बॉक्स लौंचिंग हेतु ट्रैफिक ब्लॉक लिया जा रहा है। ब्लॉक के कारण निम्नलिखित रेल सेवाएं प्रभावित रहेंगीः

▶▶ रद्द रेलसेवाएं (प्रारंभिक स्टेशन से):

▶▶ गाड़ी संख्या 14822, साबरमती–जोधपुर रेलसेवा, दिनांक 17.04.2026 एवं 18.04.2026 को रद्द रहेगी।

▶▶ गाड़ी संख्या 14821, जोधपुर–साबरमती रेलसेवा, दिनांक 16.04.2026 एवं 17.04.2026 को रद्द रहेगी।

▶▶ मार्ग परिवर्तित रेलसेवाएं (प्रारंभिक स्टेशन से):

▶▶ गाड़ी संख्या 19223, साबरमती–जम्मू तवी (17.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया मेहसाणा–भीलड़ी–लूणी चलेगी।
ठहरावः पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी

▶▶ गाड़ी संख्या 12462, साबरमती–जोधपुर (17.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया मेहसाणा–भीलड़ी–लूणी चलेगी।
ठहरावः पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी

▶▶ गाड़ी संख्या 14701, श्रीगंगानगर–बांद्रा टर्मिनस रेलसेवा (16.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया अजमेर–चित्तौड़गढ़–रतलाम–वडोदरा चलेगी।
ठहरावः भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, नीमच, मंदसौर

▶▶ गाड़ी संख्या 14707, हनुमानगढ़–दादर (17.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया लूणी–भीलड़ी–मेहसाणा चलेगी।
ठहरावः समदड़ी, जालोर, मारवाड़ भीनमाल, भीलड़ी, पाटन

▶▶ गाड़ी संख्या 20944, भगत की कोठी–बांद्रा टर्मिनस (17.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया लूणी–भीलड़ी–मेहसाणा चलेगी।
ठहरावः समदड़ी, जालोर, मारवाड़ भीनमाल, भीलड़ी, पाटन

▶▶ गाड़ी संख्या 20943, बांद्रा टर्मिनस–भगत की कोठी (16.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया मेहसाणा–भीलड़ी–लूणी चलेगी।
ठहरावः पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी

▶▶ गाड़ी संख्या 20694, बेंगलुरु–जोधपुर (15.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया मेहसाणा–भीलड़ी–लूणी चलेगी।
ठहरावः पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी

▶▶ गाड़ी संख्या 20496, हडपसर–जोधपुर (16.04.2026) परिवर्तित मार्ग वाया मेहसाणा–भीलड़ी–लूणी चलेगी।
ठहरावः पाटन, भीलड़ी, मारवाड़ भीनमाल, जालोर, समदड़ी

रेगुलेट रेलसेवाएंः

▶▶ गाड़ी संख्या 22548, साबरमती–ग्वालियर रेलसेवा (17.04.2026) पालनपुर–खीमेल स्टेशनों के मध्य 20 मिनट रेगुलेट रहेगी।

वडोदरा मंडल पर भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 135 वीं जन्मजयंती पर्व मनाया गया

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल पर भारत रत्न, संविधान रचेता, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 135 वीं जन्मजयंती मनाई गई। प्रतापनगर स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित कार्यक्रम में मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने अन्य अधिकारियों एवं मान्यता प्राप्त एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के साथ दीप प्रज्ज्वलन एवं मालयार्पण कर बाबासाहेब को पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बाबा साहेब दवारा बताए गये मार्ग पर चलने के लिए सभी से आग्रह किया और उनकी बताई बातों को आत्मसात कर अपने पद के जरिए देश को उन्नति के पथ पर ले जाने और समाज की सेवा करने का आवाहन किया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज धमीजा, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री तेजराम मीना सहित रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों उपस्थित थे।

बिहार की सत्ता में बड़ा बदलावः सम्राट चौधरी के नेतृत्व में नई सरकार, तेज फैसलों और सख्त प्रशासन के संकेत

बिहार की राजनीति ने एक बार फिर करवट ली है और इस बदलाव ने सत्ता समीकरणों के साथ-साथ भविष्य की दिशा को लेकर भी नई बहस छेड़ दी है। राजधानी पटना के लोकभवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में सम्राट चौधरी ने राज्य के 24वें मुख्यमंत्री के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ ली। राज्यपाल सैयद अता हसनैन ने उन्हें शपथ दिलाई और इसके साथ ही राज्य में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की नई सरकार का औपचारिक गठन हो गया। यह सिर्फ एक सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि बिहार की राजनीतिक धारा में एक नए अध्याय की शुरुआत मानी जा रही है।

नई सरकार के गठन में सहयोगी दल जनता दल यूनाइटेड की भी अहम भागीदारी रही। पार्टी कोटे से वरिष्ठ नेता विजय चौधरी और विजेंद्र प्रसाद यादव ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इस प्रकार राज्य में मुख्यमंत्री और दो उपमुख्यमंत्रियों के साथ सत्ता की त्रिस्तरीय संरचना सामने आई, जो गठबंधन राजनीति के संतुलन को दर्शाती है। 243 सीटों वाली विधानसभा में यह बदलाव केवल संख्या का खेल नहीं, बल्कि राजनीतिक समीकरणों के पुनर्गठन का संकेत है।

इस शपथ ग्रहण के साथ ही एक और ऐतिहासिक तथ्य जुड़ गया—सम्राट चौधरी भारतीय जनता पार्टी से आने वाले बिहार के पहले मुख्यमंत्री बन गए हैं। इससे पहले राज्य की सत्ता में भाजपा सहयोगी दल के रूप में मौजूद रही, लेकिन पहली बार उसने शीर्ष नेतृत्व अपने हाथ में लिया है। इसे राजनीतिक दृष्टि से बड़ा बदलाव माना जा रहा है, जो आने वाले समय में राज्य की नीतियों और निर्णयों पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

शपथ लेने के तुरंत बाद मुख्यमंत्री ने जिस तेजी से कामकाज शुरू किया, उसने उनके प्रशासनिक तेवर साफ कर दिए। उसी दिन सचिवालय पहुंचकर उन्होंने कार्यभार संभाला और कई अहम फाइलों पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में लगभग दो दर्जन से अधिक वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों और विभिन्न विभागों के प्रमुख सचिवों की मौजूदगी रही। इस बैठक में मुख्यमंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि सरकार की प्राथमिकता "समयबद्ध और परिणामोन्मुखी प्रशासन" होगी। उन्होंने संकेत दिया कि अब काम में देरी या लापरवाही के लिए कोई जगह नहीं होगी।

मुख्यमंत्री ने चार प्रमुख क्षेत्रों—सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और कानून-व्यवस्था—को अपनी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर रखा। उन्होंने कहा कि ये ऐसे क्षेत्र हैं, जो सीधे तौर पर राज्य की 12 करोड़ से अधिक आबादी के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन क्षेत्रों में तेजी से सुधार लाना सरकार की पहली जिम्मेदारी होगी। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि लंबित परियोजनाओं की समीक्षा कर 30 से 90 दिनों के भीतर प्रगति सुनिश्चित की जाए, अन्यथा जवाबदेही तय की जाएगी।

प्रशासनिक सख्ती का संकेत देते हुए मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि अब नौकरशाही को जवाबदेह बनाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि विकास योजनाओं में देरी किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी और हर परियोजना की निगरानी की जाएगी। यह संदेश साफ था कि नई सरकार केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि जमीन पर परिणाम चाहती है।

डिजिटल प्रशासन को बढ़ावा देने पर भी विशेष जोर दिया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी सेवाओं को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया जाए, ताकि आम नागरिकों को बार-बार दफ्तरों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने ऑनलाइन सेवाओं के विस्तार और जन शिकायत निवारण प्रणाली को मजबूत करने के निर्देश दिए। यह कदम प्रशासन को आधुनिक और जनोन्मुखी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

राजनीतिक गलियारों में इस बदलाव को लेकर चर्चाएं तेज हैं। जहां एक ओर समर्थक इसे "डबल इंजन" सरकार की मजबूती के रूप में देख रहे हैं, वहीं विपक्ष इसे नए समीकरणों के तहत सत्ता संतुलन का परिणाम बता रहा है। मुख्यमंत्री ने स्वयं यह स्पष्ट किया कि राज्य का विकास मॉडल नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार के "डबल इंजन" सिद्धांत पर आधारित रहेगा, जिसमें केंद्र और राज्य मिलकर विकास को गति देंगे।

इस राजनीतिक बदलाव के बीच ज्योतिषीय दृष्टिकोण भी चर्चा का विषय बना हुआ है। ज्योतिषाचार्य प्रसाद दीक्षित ने दावा किया कि उन्होंने पहले ही ग्रह-नक्षत्रों की गणना के आधार पर इस बदलाव की भविष्यवाणी कर दी थी। उनके अनुसार, सम्राट चौधरी की कुंडली में मंगल, चंद्र, बृहस्पति और केतु का विशेष योग है, जो उन्हें नेतृत्व और सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाला है। उन्होंने इसे एक शक्तिशाली राजयोग बताया और कहा कि उनके कार्यकाल में कई ऐसे निर्णय लिए जा सकते हैं, जो लंबे समय तक याद किए जाएंगे।

हालांकि राजनीति में ज्योतिषीय दावे हमेशा बहस का विषय रहते हैं, लेकिन यह सच है कि सम्राट चौधरी का राजनीतिक उत्थान काफी तेज रहा है। एक सामान्य कार्यकर्ता से राज्य के मुख्यमंत्री तक का उनका सफर कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है। यह बदलाव केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं, बल्कि राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव की भी कहानी है।

नई सरकार के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। बेरोजगारी, बुनियादी ढांचे की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति और कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दे लंबे समय से राज्य के सामने खड़े हैं। ऐसे में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार अपने वादों को किस हद तक जमीन पर उतार पाती है। शुरुआती संकेत जरूर यह बताते हैं कि सरकार तेज फैसले लेने और सख्त प्रशासनिक नियंत्रण की दिशा में आगे बढ़ना चाहती है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बिहार की राजनीति अब एक नए मोड़ पर खड़ी है। सत्ता परिवर्तन के साथ उम्मीदों का नया दौर शुरू हुआ है और जनता की निगाहें अब इस बात पर टिकी हैं कि यह नई सरकार किस तरह अपने वादों को हकीकत में बदलती है। आने वाले दिन न केवल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होंगे, बल्कि यह भी तय करेंगे कि यह बदलाव बिहार के विकास की दिशा में कितना प्रभावी साबित होता है।

गर्मियों में प्राकृतिक हाइड्रेशन का मंत्रः शरीर को शीतलता, ऊर्जा और संतुलन देने का सहज मार्ग - शहनाज़ हुसैन की दृष्टि

गर्मियों के मौसम में पसीने के कारण शरीर से जरूरी मिनरल्स और पानी तेजी से निकल जाते हैं जिसकी बजह से शरीर में पानी की कमी यानी डिहाइड्रेशन की दिक्कत हो जाती है।इस मौसम में अपने शरीर को हाइड्रेट करने के लिए पानी के साथ हमें पानी बाले फल , नारियल पानी , नींबू पानी जैसे इलेक्ट्रोलाइट्स का सहारा भी लेना चाहिए

हालाँकि कुछ लोग अपनी प्यास बुझाने के लिए कार्बोनेटेड ड्रिंक्स का सहारा लेते हैं जिनमे केमिकल और आर्टिफीसियल फ्लेवोर्स को मिलाकर एक उम्दा स्वाद तैयार किया जाता है और लोग अपने परिवार और मेहमानों को शौक से कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पिलाते हैं लेकिन इन ड्रिंक्स के लगातार उपयोग से शुगर और पेट सहित अन्य अनेक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं ।गर्मियों के मौसम में शरीर को तरोताजा रखने के लिए अनेक हेल्दी ड्रिंक्स उपलब्ध होते हैं जोकि शरीर में पानी की कमी दूर करते हैं और आपको अन्दर से मजबूत भी रखते हैं ।

पानी

जब आपको प्यास लगे तो समझिये की शरीर में पानी की कमी पहले ही हो चुकी है।गर्मियों में जब भी आपका शरीर डिहाइड्रेट होना शुरू करता है तो आप आलसी और सुस्त महसूस करने लगते हैं । शरीर में तरल पदार्थों की हल्की सी कमी भी आपका मूड खराब कर सकती है एक दिन में कितना पानी पीना चाहिए इसका कोई पैमाना तय नहीं है।यह आपकी ऊंचाई , बजन , जेंडर, सक्रियता और स्वास्थ्य पर निर्भर करता है।स्वास्थ्य के माहिरों की माने तो एक आदमी को औसतन 8 -10 गिलास पानी पीना चाहिए।गर्भवती महिलाओं को 10 गिलास पानी पीना चाहिए जबकि स्तनपान करबाने बाली महिलाओं को कम से कम 12 गिलास पानी पीना चाहिए ।दिन में हर दो घण्टे में एक गिलास पानी पीना चाहिए।आपको स्पोर्ट्स ड्रिंक से परहेज करना चाहिए क्योंकि इसमें बिद्यमान तत्व आपका शुगर का स्तर बढ़ा सकते हैं और आपको नुक्सान झेलना पड़ सकता है।स्पोर्ट्स ड्रिंक उन लोगों को पीना चाहिए

जोकि जिम आदि में लम्बे समय तक गहन एक्सरसाइज आदि करते हैं और जिन्हे पसीना आता है ।पानी में कोई भी शुगर या कैलोरी आदि नहीं मिलाई जाती जिसकी बजह से आप दिन भर पानी पी सकते यही।सादे पानी में खीरा , निम्बू ,पुदीना आदि मिलाकर इसका स्वाद बढ़ाया जा सकता है जिससे इसे पीना सहज हो सकता है। इनके मिलाने से पानी में उचित पौषण और प्रकृतिक सुगन्ध का अहसास होता है तथा शरीर को डिहाइड्रेट करने का यह स्वादिष्ट तरीका भी है । खीरा , निम्बू ,पुदीना का उपयोग त्वचा को स्वास्थ्यबर्धक और आकर्षक बनता है / खीरे में लगभग 95 प्रतिशत पानी होता है और इसे प्रकृति ने सबसे ज्यादा हाइड्रेटिंग फ़ूड बनाया है ।खीरे में विटामिन सी और के विद्यमान होते हैं जोकि त्वचा के संक्रमण को रोकते हैं और शरीर में कोलेजन उत्पादन को प्रमोट करते हैं

पानी की बोतल हमेशा अपने नज़दीक रखिये। दुबारा उपयोग में आने बाली पानी की बोतल अपने साथ रखिए ताकि इसे रिफिल किया जा सके

पानी बाले फल

गर्मियों में शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए पानी वाले फलों का सेवन बेहतर होता है क्योंकि इनमे प्रकृतिक शुगर , फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स मौजूद होते हैं।यह हाइड्रेशन के साथ साथ शरीर को गर्मी और सूरज की धूप से होने बाले नुकसान से भी सुरक्षा प्रदान करते हैं।ज्यादातर फलों में पानी की अधिकता के साथ ही विटामिन , मिनरल और एंटीऑक्सिडेंट्स मौजूद होते हैं।तरबूज में 92 प्रतिशत पानी होता है जबकि स्ट्रॉबेरी में 91 प्रतिशत , खरबूजे में 90 प्रतिशत, और आड़ू में 89% पानी होता है।यह फल हाइड्रेशन के साथ ही शरीर को विटामिन सी , विटामिन ए , पोटैसियम आदि भी प्रदान करते हैं जिससे शरीर में ऊर्जा मिलती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता विक्सित होती है

आप अपनी दिनचर्या में हल्का सा बदलाब करके इन फलों को रोजाना अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।आप फ्रूट सलाद या स्नैक्स बना कर सुबह के नाश्ते में ले सकते है।इन फलों को दही , दूध ,सब्जियों आदि में ब्लेंडर से पीस कर स्मूदी बना कर उपयोग कर सकते हो जिससे यह अधिक स्वास्थ्य बर्धक और पौष्टिक बनता है।दोपहर में इन फलों के स्लाइस मिड डे ब्रेक के दौरान ले सकते है ।ज्यादातर फलों का ही सेवन करें और अगर आप फ्रूट जूस ले रहे हैं तो आधा कप बेहतर होगा। फ्रूट ड्रिंक या फ्रूट कॉकटेल में सोडियम और चीनी विद्यमान होती है।कोशिश करें की बिभिन्न प्रकार के अलग प्रजातियों के कलर्ड फल ग्रहण करें क्योंकि इनमे न्यूट्रिशन की भरमार रहती है। अपने फ्रिज ने फलों का स्टॉक रखें ताकि यह आपको आसानी से उपलब्ध हों।दिन में दो बार पानी बाले फलों के सेवन की आदत डालें

नारियल का पानी

नारियल पानी प्राकृतिक और स्वास्थ्यवर्धक पेय है जोकि शरीर को हाइड्रेट करता है जिससे आप उर्जाबान और एक्टिव महसूस करते हैं। यह ना सिर्फ शरीर को ठंडक देता है बल्कि इलेक्ट्रोलाइट्स से भरपूर होता है, जो ताजगी और ऊर्जा प्रदान करते हैं/ नारियल पानी पीने से थकान और कमजोरी दूर होती है और यह पाचन क्रिया को भी सुधारता है।

नारियल पानी दिन के किसी भी समय पिया जा सकता हैए लेकिन आयुर्वेदाचार्य इसे सुबह खाली पेट पीने की सलाह देते हैं ताकि आपको इसका अधिकतम लाभ मिल सके ।नारियल पानी में एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन सी होते हैंए जो स्किन को अंदर से ग्लोइंग बनाने में मददगार है।सुबह खाली पेट एक गिलास नारियल पानी पीने से त्वचा हेल्दी और आकर्षक बनती है ।नारियल पानी में फाइबर होता है जो पाचन तंत्र को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है/ रोजाना एक गिलास नारियल पानी पीने से पेट को हेल्दी रखने में मदद मिल सकती है।

नारियल पानी में 94 प्रतिशत पानी की मात्रा होती है। ये शरीर को जरूरी इलेक्ट्रोलाइट्स की पूर्ति करता है। गर्मियों के महीने में आउटडोर एक्टिविटीज ।स्पोर्ट्स आदि के बाद नारियल पानी का सेवन काफी लाभदायक माना जाता है क्योंकि इसमें मौजूद इलेक्ट्रोलाइट्स शरीर को हाइड्रेटेड और उर्जाबान रखने में मदद करते हैं।

छाछ

गर्मियों में पुदीना छाछ पीने से पेट शांत रहता है और पाचन क्रिया सही रहती है/ यह शरीर को ठंडक और हाइड्रेशन दोनों प्रदान करता है/ इसमें प्रोटीन, कैल्शियमए और विटामिन बी 12 जैसे पोषक तत्व होते हैं, जो शरीर को ऊर्जा देने के साथ.साथ कमजोरी और थकान को भी दूर करते हैं/ छाछ में इलेक्ट्रोलाइट्स तत्व विद्यमान होते हैं जोकि शरीर के वाटर बैलेंस को बनाये रखने में मदद रखते हैं । छाछ में दूध और दही के मुकाबले पानी की मात्रा ज्यादा होती है जबकि फैट और कैलोरी की मात्रा कम होती है।मोनोपौज़ के बाद जिन महिलाओं का स्वभाव चिढ़ चिढ़ा हो जाता है उन्हें निमयित रूप से एक गिलास छाछ का सेवन करना चाहिए।अगर छाछ के खट्टे स्वाद से आप परेशान रहते हों तो इसमें हल्के.फुल्के मसाले और काला नमक मिला कर आप इसे स्वादिष्ट बना लीजिये ।छाछ को दोपहर के खाने के साथ पीना सबसे ज्यादा हितकर माना जाता है। इस समय छाछ पीने से ब्लोटिंग, गैस, एसिडिटी से छुटकारा मिलता है।हम अकसर तला भूना या मसालेदार खाना खाते रहते हैं जिसकी बजह से शरीर के अन्दर का तापमान बढ़ जाता है /छाछ में प्रोबायोटिक्स तत्व मौजूद होते हैं और रोजाना 1 गिलास छाछ पीने से इस समस्या से राहत पाई जा सकती है।

आइस्ड हर्बल चाय

गर्मियां आ गई हैं तो ऐसे में बार बार गरमा.गरम चाय पीना सेहत के लिए नुकसान दायक सावित हो सकता है।ऐसे में आप एंटी.ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर हर्बल चाय ट्राई कर सकते हैं जोकि सेहत और स्वाद दोनों तरफ से बेहतर सावित होगी

हर्बल चाय, खासकर मिंट और ग्रीन टी गर्मियों में बहुत फायदेमंद होती है। यह न केवल शरीर को हाइड्रेट करती हैए बल्कि शांति और ताजगी भी देती है/ हर्बल चाय में शहद या कम चीनी का उपयोग करें ताकि यह ज्यादा हेल्दी रहे।हर्बल चाय के साथ साथ आप आइस्ड टी भी उपयोग कर सकते हैं जोकि आपको तरोताजा रखेगी।आइस्ड टी में हर्बल चाय के अतिरिकत कुछ कूलिंग और रिफ्रेशिंग चीजों को भी शामिल किया जाता है।

दिन में एक हर्बल आइस टी के सेवन से उच्च रक्तचत , शुगर और तनाव को नियन्त्रित करने में मदद मिलती है । हर्बल आइस टी तुलसी, दालचीनी, मुलेठी, पुदीना , लौंग , काली मिर्च आदि से बनती है। आप कैमोमाइल, पेपरमिंट, या हिबिस्कस की आइस टी बनाकर भी पी सकते हैं। इससे ना केवल आप अधिक रिलैक्स फील करते हैं बल्कि पाचन के लिए भी इन्हें काफी अच्छा अच्छा माना जाता है।

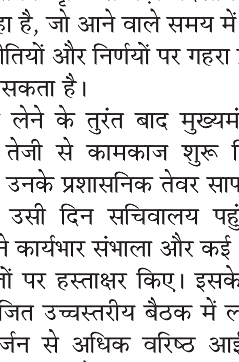

અમદાવાદ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનની
સ્થાનિક સ્વરાજ્ય ચૂટણી-૨૦૨૬
વોર્ડ - ૪ સાબરમતી
ના બક્ષીપંચના અપક્ષ ઉમેદવાર

અ.નં.	નામ	નિશાન	બટન
૧૫	અજયકુમાર રમણલાલ પ્રજાપતિ (અજય પટણી)	કુવો	

મતદાન તા.૨૬/૦૪/૨૦૨૬ ને રવિવારના રોજ સમય : સવારે ૭-૦૦ થી સાંજે ૬-૦૦ સુધી
સાબરમતીના ભાવિ વિકાસ માટેના બક્ષીપંચના અપક્ષ ઉમેદવાર તરીકે ઉમેદવારી કરેલ છે.
તો આપનો કિંમતી અને પવિત્ર એક જ વોટ
આપી વિજયી બનાવવા મારી નમ્ર વિનંતી છે.

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में गांधीनगर में नारी शक्ति वंदन सम्मेलन

▸▸ 'विकसित भारत@2047' के ध्येय के अंतर्गत महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के लिए अडिग संकल्प के साथ आयोजित सम्मेलन को नारी शक्ति का व्यापक समर्थन

▸▸ 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का कार्यान्वयन राज्यों की विधानसभाओं से लेकर देश की संसद तक महिला शक्ति की भागीदारी से विकसित भारत की यात्रा का एक नया मील का पत्थर बनेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ पद्मश्री रमीलाबेन गामित, गांधीनगर की महापौर और विधायकों सहित समाज की अग्रणी नारी शक्ति की प्रेरक उपस्थिति

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को गांधीनगर में आयोजित 'नारी शक्ति वंदन सम्मेलन' की अध्यक्षता करते हुए यह साफ किया कि महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के माध्यम से विकसित गुजरात 2047 का निर्माण करके विधानसभा से लेकर संसद तक महिलाओं की 33 फीसदी भागीदारी के जरिए नारी शक्ति की सहभागिता का एक नया इतिहास रचा जाए, इसके लिए प्रधानमंत्री का संकल्प इस विधेयक को समय पर क्रियान्वित करने का है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि नीति-निर्धारण की प्रक्रिया में महिलाओं की निर्णायक भूमिका से शासन व्यवस्था में अधिक संवेदनशीलता, पारदर्शिता और संतुलन आएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरणा से 2023 में नारी शक्ति वंदन अधिनियम संसद में पारित होने से यह वर्ष 21वीं सदी के भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। उन्होंने कहा कि संसद के दोनों सदनों में पारित 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' केवल महिला आरक्षण का कानून नहीं है, बल्कि राजनीतिक फलक पर क्रांति लाने वाला एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक अहम कदम उठाने जा रहे हैं। इसके लिए संसद का विशेष सत्र तीन दिनों के लिए आयोजित होने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव पूजनीय स्थान दिया गया है और यह अधिनियम इसे नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ प्रधानमंत्री का लक्ष्य पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक, महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करने का उचित अवसर प्रदान करना है

▸▸ नीति-निर्धारण की प्रक्रिया में महिलाओं की निर्णायक भूमिका से शासन व्यवस्था में अधिक संवेदनशीलता, पारदर्शिता और संतुलन आएगा

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' लोकतंत्र के इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम है

▸▸ केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं

▸▸ घर-परिवार के निर्णयों में मजबूती से खड़ी रहने वाली नारी शक्ति की सक्रिय सहभागिता से राष्ट्र निर्माण द्वारा विकसित भारत 2047 का ध्येय साकार होगा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में गुजरात हमेशा महिला-उन्मुख नीतियों और महिला सशक्तिकरण का अग्रदूत रहा है। राज्य में पशुपालन और डेयरी क्षेत्र में हुई क्रांति की सफलता के पीछे परिश्रमी महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान है।

उनकी ही प्रेरणा से राज्य में एक दशक पहले ही पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण देकर स्थानीय निकायों में निर्णायक भूमिका दी गई।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के नेतृत्व और मार्गदर्शन में महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए लागू की गई विभिन्न योजनाओं पर रोशनी डालते हुए कहा कि सखी मंडलों के माध्यम से लाखों बहनों ने आत्मनिर्भर बनकर माइक्रो-एंटरप्रेन्योर के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। गंभीर बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए पीएम-जय का सुरक्षा कवच और उज्ज्वला योजना के माध्यम से धुएं से मुक्त रसोई जैसी अनेक महिला-उन्मुख योजनाओं ने उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार किया है। गरीब और मध्यम वर्ग के लिए वरदान इस पीएम-दय योजना के तहत उपचार के बाद घर जाने के लिए भी सरकार 300 रुपए की सहायता देती है। नमो ड्रोन दीदी और लखपति दीदी जैसी नई योजनाओं के जरिए देश की करोड़ों बहनों को आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन मिला है।

उन्होंने आगे कहा कि केंद्र सरकार की हर योजना के केंद्र में अंतिम छोर का व्यक्ति और अदने आदमी का आत्मसम्मान है। केंद्र सरकार की गरीब कल्याण-उन्मुख अनेक योजनाओं के कारण लगभग 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि 'सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ विकसित गुजरात और विकसित भारत के निर्माण में नारी शक्ति कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ेगी।

नारी शक्ति की दृढ़ता के बारे में मुख्यमंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा कि परिवार में माता, बेटी या पत्नी, किसी भी भूमिका में नारी हमेशा दृढ़तापूर्वक खड़ी रहती है। इस नारी शक्ति वंदन अधिनियम के परिणामस्वरूप अब महिलाएं राज्य और देश के विकास में भी योगदान देंगी और विकसित भारत के लिए 'विकसित गुजरात' का लक्ष्य भी साकार होगा।

नारी शक्ति वंदन सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल ने कहा कि राज्य के विकास में स्थानीय निकायों की महत्वपूर्ण भूमिका के साथ-साथ इस विकास यात्रा में महिलाओं का योगदान एक मार्गदर्शक के रूप में है। आज राज्य में महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, सेवा, स्टार्टअप और शासन क्षेत्र में सक्रिय रूप से आगे बढ़ रही हैं। इतना ही नहीं, वे स्वयं के विकास के साथ ही पूरे राज्य की प्रगति में भी सहभागी बनी हैं। स्वच्छता, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, शिक्षा और सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में महिलाओं ने उत्कृष्ट कार्य किया है, तब इस पुण्यभूमि में नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक ऐतिहासिक और दिशासूचक कदम है। इस अधिनियम के जरिए लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण का प्रावधान किया गया है।

इस अवसर पर उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उनके दूरदर्शी नेतृत्व में नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू होगा, जो महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में समान और सशक्त भागीदारी देने का एक ऐतिहासिक प्रयास होगा। यह कानून केवल संख्या में बढ़ोतरी करने का नहीं, बल्कि महिलाओं के जीवन में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

इस अवसर पर पद्मश्री विजेता श्रीमती रमीलाबेन गामित ने कहा कि जब महिलाओं को उचित अवसर और प्रोत्साहन मिलता है, तो वे समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि से होने और सीमित शिक्षा के बावजूद उन्होंने अब तक 162 स्वयं सहायता समूहों को कार्यरत किया है। इन समूहों द्वारा बहनों को राजमिस्त्री, सिलाई, ब्यूटी पार्लर और वेस्ट से बेस्ट बनाने का प्रशिक्षण देकर आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाया जा रहा है। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि वे गांवों में स्वच्छता अभियान और सुकन्या समृद्धि जैसी सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम पंक्ति में खड़ी महिलाओं तक पहुंचाने के भगीरथ प्रयास कर रही हैं।

गांधीनगर उत्तर की विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल ने महिलाओं के अधिकार और सम्मान के महत्व पर बल देते हुए कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास में नारी शक्ति की भूमिका अनिवार्य है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात हमेशा शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा है। इन दिनों गुजरात में चल रहे स्थानीय निकायों के चुनावों में महिलाएं बड़ी संख्या में उम्मीदवार हैं, जो राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में महिला सशक्तिकरण को अधिक गति मिलेगी। महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा साबित कर रही हैं।

उन्होंने आगे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में संसद से पारित 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' की प्रशंसा करते हुए कहा कि 33 फीसदी आरक्षण के माध्यम से महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी का एक नया मार्ग मिला है। यह अधिनियम केवल एक कानून नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है। 'सशक्त नारी, सशक्त समाज, सशक्त राष्ट्र' के संकल्प के साथ उन्होंने प्रत्येक नारी से स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्र के निर्माण में सहयोग देने का आह्वान किया।

इस मौके पर महिला सशक्तिकरण और ग्लोबल बिजनेस विजन पर बल देते हुए भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंभ (फिक्की) की महिला विंग अहमदाबाद की चेयरपर्सन सुश्री उषा जायसवाल ने कहा कि महिलाओं के लिए व्यवसाय केवल मुनाफा कमाने का साधन नहीं है, परन्तु मूल्य निर्माण और समाज के साथ जुड़ने का मार्ग है। भारतीय महिला उद्यमियों में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की संपूर्ण क्षमता है। आज महिलाएं केवल सहभागी नहीं है, बल्कि लीडर्स और चेंज मेकर्स बन गई हैं।

कार्यक्रम में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी (बीएओयू) की कुलपति डॉ. अमी उपाध्याय, उद्यमी श्री तृप्ति जैन और पारू जयकृष्णा सहित बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों की महिलाएं एवं सखी मंडलों की बहनें मौजूद रहीं।

भावनगर मंडल पर हर्षोल्लास के साथ मनाई गई 135वीं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयंती

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में संविधान निर्माता भारतरत्न डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की 135वीं जयंती हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई।

मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि 14 अप्रैल, 2026 (मंगलवार) को कम्युनिटी हॉल भावनगर परा में एससी/एसटी एसोसिएशन द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा, मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उपस्थित रहे एवं डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर एक सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

मंडल कार्यालय में यह कार्यक्रम 15 अप्रैल (बुधवार) को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा ने मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार "डॉ. बी.आर. अम्बेडकरः भारत में सामाजिक न्याय के वास्तुकार" विषय पर मंडल स्तर पर कर्मचारियों हेतु निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को क्रमशः 2000, 1500 एवं 1000 के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रतियोगिता में सपना कुशवाहा (SSE/TRD-BVP) ने प्रथम स्थान, मानसी यादव (SSE/TRD-BVP) ने द्वितीय स्थान तथा रिकी हितेष कुमार तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मंडल कार्यालय के सभी अधिकारी, विभिन्न यूनियनों के पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे तथा सभी ने बारी-बारी से डॉ. अम्बेडकर को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का आयोजन स्थापना विभाग द्वारा वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी श्री हूबलाल जगन के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

श्री आदिश पठानिया ने पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक का पदभार ग्रहण किया

भारतीय रेल यातायात सेवा (IRTS) के 2010 बैच के अधिकारी श्री आदिश पठानिया ने पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक (Sr. DCM) का पदभार ग्रहण कर लिया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, श्री पठानिया एक अनुभवी रेलवे अधिकारी हैं, जिनके पास रेलवे परिचालन, वाणिज्य प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्र में एक दशक से अधिक का अनुभव है। अपने सेवा काल के दौरान आपने उपनगरीय परिचालन, माल परिवहन लॉजिस्टिक्स, स्टेशन प्रबंधन तथा वाणिज्यिक रणनीति से संबंधित महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है।

श्री पठानिया ने पॉलिटिकल साइंस में परास्नातक (Master's Degree) की उपाधि प्राप्त की है। आपका व्यावसायिक सफर विभिन्न रेलवे ज़ोन में विविध अनुभवों से परिपूर्ण रहा है। आपने अपने करियर की शुरुआत उत्तर मध्य रेलवे के झांसी मंडल में सहायक परिचालन प्रबंधक के रूप में की। इसके पश्चात आपने पश्चिम रेलवे में सहायक यातायात प्रबंधक (सबर्बन), मंडल परिचालन प्रबंधक तथा एरिया मैनेजर जैसे विभिन्न पदों पर कार्य किया। आपने कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, अहमदाबाद में महाप्रबंधक (वाणिज्य एवं परिचालन) के रूप में भी सेवाएं दी हैं। मध्य रेल में आपने वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक (समन्वय), मुंबई तथा बाद में उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (गुड्स) के रूप में कार्य किया। अब आपने पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के रूप में अपना वर्तमान दायित्व संभाला है।

मुंबई सेंट्रल में पूर्व में महत्वपूर्ण परिचालन पदों पर कार्य करने के कारण श्री पठानिया मुंबई की रेलवे प्रणाली की कार्यप्रणाली से भली-भांति परिचित हैं। अपने वर्तमान पद पर वे यात्री एवं माल वाणिज्यिक परिचालन, टिकटिंग, पार्सल, कैटरिंग, लीजिंग सेवाएं, यात्री सुविधाएं, राजस्व से जुड़े विषयों तथा वाणिज्यिक नीतियों के कार्यान्वयन की प्रमुख जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे।

वे खेलों के प्रति भी विशेष रुचि रखते हैं तथा क्रिकेट के प्रति उनका गहरा लगाव है, जिसे वे सक्रिय रूप से आगे बढ़ाते हैं।

वित्त वर्ष 2025–26 में भारत का निर्यात 860 बिलियन डॉलर के पार; फियो ने मज़बूत प्रदर्शन की सराहना की

नई दिल्ली, 15 अप्रैल, 2026: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन्स (फियो) ने वित्त वर्ष 2025–26 में भारत के ज़बरदस्त विदेश व्यापार प्रदर्शन का स्वागत किया है। इस दौरान कुल निर्यात (वस्तु और सेवाएँ) 860.09 बिलियन डॉलर के अहम पड़ाव को पार कर गया, जो निर्यात क्षेत्र के लचीलेपन और प्रतिस्पर्धी क्षमता को दर्शाता है।

इस साल वस्तु का निर्यात 441.78 बिलियन डॉलर रहा, जबकि अकेले मार्च 2026 में कुल निर्यात 74.11 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। वित्त वर्ष 2025–26 के लिए कुल आयात 979.40 बिलियन डॉलर दर्ज किया गया, जो मज़बूत घरेलू माँग और औद्योगिक गतिविधियों का संकेत है।

इस प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, फियो के अध्यक्ष श्री एस. सी. रल्हन ने कहा: "खासकर वैश्विक अनिश्चितताओं, सप्लाई चेन में रुकावटों और माँग में उतार-चढ़ाव के बीच निर्यात में 860 बिलियन डॉलर का आँकड़ा पार करना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है । यह भारतीय निर्यातकों की अनुकूलन क्षमता और ताक़त को उजागर करता है।"

उन्होंने बताया कि निर्यात में बढ़ोतरी की वजह एक विविध बास्केट थी, जिसमें इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक्स, दवाएँ, रसायन, कपड़ा, रत्न और आभूषण, चावल और समुद्री उत्पाद शामिल थे, जिससे वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की स्थिति और मज़बूत हुई है।

अमेरिका, यूएई, चीन, नीदरलैंड और ब्रिटेन निर्यात के मुख्य गंतव्य बने रहे। फियो ने बाज़ारों में और विविधता लाने और भारत की वैश्विक पहुँच का विस्तार करने के लिए मुक्त व्यापार समझौतों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने की ज़रूरत पर बल दिया।

श्री रल्हन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि लॉजिस्टिक्स दक्षता में सुधार, लेन-देन की लागत में कमी और विशेष रूप से एमएसएमई के लिए सस्ती ऋण सुविधा सुनिश्चित करना—निर्यात की गति को बनाए रखने के लिए बेहद ज़रूरी होगा।

उन्होंने कहा, "लगातार नीतिगत समर्थन और व्यापार सुविधा के साथ, भारत वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने और 'विकसित भारत' के विज़न के तहत एक अग्रणी निर्यात महाशक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए पूरी तरह तैयार है।"

पश्चिम रेलवे पर श्रद्धापूर्वक मनाई गई,भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की जयंती

पश्चिम रेलवे पर चर्चगेट, मुंबई स्थित अपने मुख्यालय में भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की 135वीं जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस स्मृति समारोह का आयोजन पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय के नेतृत्व में किया गया, जिन्होंने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर प्रमुख विभागाध्यक्ष, मान्यताप्राप्त ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि, एससी/एसटी एवं ओबीसी एसोसिएशनों के सदस्य तथा रेलवे कर्मचारी उपस्थित रहे। पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों एवं इकाइयों में भी इस दिवस को पूरी श्रद्धा के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री पाण्डेय ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित की तथा मेमोरियल कैन्डल जलाई। अपने संबोधन में श्री पाण्डेय ने भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संविधान निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान को नमन किया। उन्होंने समाज के वंचित वर्गों के उत्थान में डॉ. अंबेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका तथा भारतीय समाज के विकास एवं राष्ट्र निर्माण में उनकी स्थायी विरासत पर भी प्रकाश डाला।

सोना वायदा में 172 रुपये और चांदी वायदा में 1171 रुपये की नरमी: क्रूड ऑयल वायदा में 62 रुपये की वृद्धि

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 354123.79 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 31465.31 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 322657.93 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 37200 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 5485.08 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 19090.89 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा 154757 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 155048 रुपये और नीचे में 153706 रुपये पर पहुंचकर, 154817 रुपये के पिछले बंद के सामने 172 रुपये या 0.11 फीसदी घटकर 154645 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 88 रुपये या 0.07 फीसदी औंधकर 123084 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 11 रुपये या 0.07 फीसदी औंधकर 15422 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी मई वायदा 152996 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 153500 रुपये और नीचे में 152113 रुपये पर पहुंचकर, 178 रुपये या 0.12 फीसदी औंधकर 153089 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम 153925 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 154332 रुपये और नीचे में 152400 रुपये पर पहुंचकर, 153468 रुपये के पिछले बंद के सामने 133 रुपये या 0.09 फीसदी औंधकर 153335 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा सत्र के आरंभ में 254343 रुपये के भाव पर खूलकर, 255617 रुपये के दिन के उच्च और 248720 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 252750 रुपये के पिछले बंद के सामने 1171 रुपये या 0.46 फीसदी लुढ़ककर 251579 रुपये प्रति किलो बोला गया। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 483 रुपये या 0.19 फीसदी घटकर 252998 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 476 रुपये या 0.19 फीसदी गिरकर 252929 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 31465.31 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 322657.93 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 19090.89 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37200 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 6211.76 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 4.4 रुपये या 0.35 फीसदी की तेजी के संग 1273.5 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 2.55 रुपये या 0.76 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 337.7 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 95 पैसे या 0.26 फीसदी की नरमी के साथ 365.95 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 15 पैसे या 0.08 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 195.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5942.40 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा 8518 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 8726 रुपये और नीचे में 8433 रुपये पर पहुंचकर, 62 रुपये या 0.72 फीसदी बढ़कर 8633 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 62 रुपये या 0.72 फीसदी की तेजी के संग 8636 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा 244 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 245.5 रुपये और नीचे में 242 रुपये पर पहुंचकर, 243.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 1.6 रुपये या 0.66 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 244.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 1.5 रुपये या 0.62 फीसदी की मजबूती के साथ 244.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा 985 रुपये पर खूलकर, 1.5 रुपये या 0.15 फीसदी बढ़कर 984.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 10618.13 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8472.76 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 5301.33 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 487.39 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 19.71 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 371.23 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4748.81 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1164.76 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 4.20 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8790 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 54480 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26542 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 361523 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 60180 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7301 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 20468 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 81213 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17937 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 52813 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा 36832 पॉइंट पर खूलकर, 37396 के उच्च और 36832 के नीचले स्तर को छूकर, 183 पॉइंट बढ़कर 37200 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 27.8 रुपये की गिरावट के साथ 93.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 245 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 80 पैसे के सुधार के साथ 8.9 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 16 रुपये की गिरावट के साथ 218 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 135 रुपये की गिरावट के साथ 457 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 61 पैसे के सुधार के साथ 4.78 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 335 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 3 पैसे की नरमी के साथ 6.08 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 8500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 63.3 रुपये की गिरावट के साथ 165.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 240 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 1.45 रुपये की गिरावट के साथ 5.55 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 54.5 रुपये की गिरावट के साथ 1557.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 54.5 रुपये की गिरावट के साथ 319.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 12 पैसे के सुधार के साथ 6.65 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 330 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 41 पैसे के सुधार के साथ 2 रुपये हुआ।